श्रीधाम कान्ति

(ले०--सा० स्वामी श्रीयुगलानन्यशरणजी महाराज)

मञ्जु छन्द—

श्री श्री सहस सहित सुखसर रस सागर धाम उजागर। श्रीसाकेत सुभग सर्वोपर निज निवास नव नागर। अखिल संत श्रुति सुगुन प्रशंसित अमल अनूपम आगर। श्रीयुगलानन्य सुधीर वास सजु ज्यों नागरि सिर गागर ॥ १ ॥

पाप ताप संताप दाप दल दलत पलक भर पेखे। अद्भुत कला कुशल कामद श्रीअवध-धाम दग देखे॥ अखिल लोक सेवित पंकजपद असद समन भ्रम वेषे। श्रीयुगलानन्यशरन विमलावर वास न त्याग निमेषे। २ ॥

जौलौं अवध सरूप जीव जड़जाल बँध्यो नहिं जान्यो। तौलौं ब्रत तीरथ नाना मत योगादिक फुर मान्यों। श्रीरघुबीर कृपा भाजन सतसंग अनुग्रह आन्यो। श्रीयुगलानन्यशरन वाही धन मोद महान् समान्यो। ३ ।

बार बार धिक्कार ताहि जो भरत खंड मधि आई॥ लख्यो न नैन कौशला सुन्दर श्रीसरयू सुखदाई। जीवन जन्म जाय कारन

अर्थ-श्री १००८ अनंत श्रीविभूषित सुख का सरोवर, एवं रसका समुद्र, प्रकाशमय, सर्वोपर सुन्दर श्रीसाकेत धाम में बड़भागी चतुर लोग निवास करते हैं। स्वामी श्रीयुगलानन्यशरणजी महाराज कहते हैं कि समस्त वेद शास्त्र से प्रशंसित, निर्मल अनुपम सर्व श्रेष्ठ श्रीअवध में ऐसा स्थिर निवास सजो जैसा कि जल भरने वाली स्त्री के सिर पर घड़ा स्थिर रहता है ॥ १

अर्थ--श्रीअवधधाम के दर्शन करते ही समस्त पाप संताप नष्ट हो जाते हैं। 'देखत पुरी अखिल अघ भागा' अद्भुत कलाओं से कुशल, दर्शन मात्र से भक्तों के लिए काम पूरक हैं। समस्त लोक श्रीधाम के चरणों का सेवन करते रहते हैं, दूषित भ्रम समूह को नाश करने वाले हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीअयोध्याजी का निवास एक निमेष के लिए भी नहीं छोड़ना चाहिए ॥ २ ॥

जड़ जगत् जाल में बंधा हुआ जीव जब तक श्रीअवधधाम का यथार्थ स्वरूप नहीं जानता है तभी तक अनेकों ब्रत तीर्थ, नाना मतों एवं योग वैराग्य आदि साधनों को सत्य मानता है। श्रीरघुनाथजी की कृपा से जब सन्तों का संग होगा तब सन्तों के अनुग्रह से उसी समय महान् आनन्द सागर में डूब जायगा ॥ ३ ॥

जिसने भारतवर्ष में जन्म लेकर भी सुन्दर श्रीकोशलपुरी एवं श्रीसरयूजी का दर्शन नहीं किया उसको बार-बार धिक्कार है। उसका जीवन व्यर्थ

बिनु जननी जठर जलाई। श्रीयुगलानन्य-शरन सब मत तजु सजु श्रीधाम सगाई ।४।।

है, अकारण ही उसने माता के उदर को जलाया। श्रीमहाराज कहते हैं कि सभी मतों को छोड़कर केवल श्रीअवधधाम से दृढ़ सम्बन्ध करलो ।। ४ ।।

सर्वोपरि आनन्द सुधा निधि आठयाम जहं सरसे। रसिक राज सिरताज संग नव रंग बिलच्छन बरसे। वैकुंठादि धाम सेवा रत रहत एक रस तरसे। श्रीयुगलानन्यशरन धामी सुख बिना धाम नहिं दरसे। ५।

जहां सबसे उत्कृष्ट आनन्द सुधा का सागर आठों याम एकरस सदा उमड़ता रहता है, रसिक राज सिरताज श्रीरघुनन्दन के साथ परिकरों के विलक्षण नित नवीन रहस्य की वर्षा होती रहती है, वैकुण्ठ आदि जितने भगवद् धाम हैं वे सभी लालसा के साथ सेवा में रत रहतेहैं। श्रीमहाराज-जी कहते हैं कि धामी श्रीजानकीजीवनजी का परम सुख श्रीधाम के बिना नहीं प्राप्त हो सकता है ।।५।।

नाम रूप गुन गन सेवन मधि यतन सुमति अवधारी। काहू मध्य एक रस दुर्लभ दृढ़ अनन्य मन भारी। सबसे सुलभ सहज मंगलमय धाम रहस्य विचारी। श्रीयुगलानन्य शरन सेवन श्रीअवध स्वच्छ श्रमहारी।। ६ ।।

अर्थ--श्रीसीतारामजी के नाम, रूप, गुण, लीला सभी नित्य हैं किन्तु इनकी उपासना के लिये यत्न एवं सुन्दर बुद्धि की आवश्यकता है। नाम का यत्न स्पष्ट ही है, लीला में बिना बुद्धि के प्रवेश होता ही नहीं, स्थिर चित्त के बिना रूप का दर्शन भी दुर्लभ ही है। अतः अखण्ड एक रस अनन्यता के साथ इन सबों की उपासना दुर्लभ है। विचार करने पर सबसे सुलभ मंगलमय श्रीधाम का रहस्य प्रतीत होता है। अतः श्रीमहाराज कहते हैं कि सदा सेवन के योग्य श्रमहारक निर्मल श्रीधाम ही है। सोते-जागते, बैठते-उठते, पवित्र रोग शोक आदि सभी अवस्थाओं में श्रीधाम का सम्पर्क बना रहता है। श्रीधाम की सुखद गोद में जीव सदा बिना यत्न ही सुरक्षित रहता है ।। ६ ।।

अनुभव अमल अजूप अभय अनवद्य अखंड अनूपा। अमर अजर कारन अनन्य श्रीअवध मरम रसरूपा।। विरह व्यथा व्याकुल बनचर ध्वज व्याध विरोध विरूपा। युगला-नन्यशरन बिकार बहु हरन वकार निरूपा ।।७।

अर्थ-अब अवध का शब्दार्थ कहते हैं--निर्मल, निरूपम अभयप्रद, अखण्ड अनुभव देने वाले तथा अपने आश्रितों को अजर अमर करने वाले श्री-अवध धाम हैं। यह अर्थ अकार से लभ्य है। श्री-महाराजजी कहते हैं कि--विरह का दुख व्याकुलता आदि समस्त विरोधी बिकारों का हरण करने वाला वकार है।। ७।।

धर्म ध्यान धारना, ध्येय धुर धाम धीरता धामी। धवल धुरीन पीन मत प्रीतम धनद धकार सदामी ॥ वरन तीन तर जोह जपत जन जागत रैन ललामी। युगलानन्यशरन सर्वस सुख धाम बसे आरामी ॥ ८॥

कीट पतंग तुरंग कुरंग विहंग सुरंग संवारे। श्रीसाकेत सुरज पावन परसत श्री-धाम पधारें। नींच ऊँच सम विसम भेद श्री-अवध न कबहुँ निहारें युगलानन्यशरन संतत निज बाहु बलन सब तारें। ६ ॥

पापी पाँच प्रपंच पगे पंचाल देशके वासी। चोरीकरन हेतु आये श्रीअवध बीच अघ राशी। कृपा प्रसाद पाय दरशन पद पाये परम प्रकाशी। युगलानन्यशरन गाथा वर विदित प्रभाव प्रभासी ॥ १ ॥

सत चित मोद कंद आमय हर अवध विचित्र विराजे। जड़ चेतन जे जीव बसत ते मकल ईशवपु आजे। गोलोकादि विभूति हेतु अपराजित नाम सुराजे। युगलानन्यशरन सुसत्य प्रिय वास छटा छवि छाजे। ।११।

अवध अगाध अबाध एक रस अमल अनंत अधारा। अजय अभय अविछिन्न हीन गुन परम परत्व प्रचारा ॥ महिमा अकथ अलेष अगोचर श्रुति सत विमल विचारा। युगला-नन्य शरन सियवर निज कृपा धाम अधिकारा ॥ १२ ॥

अर्थ--धर्म ध्यान धारणा ध्येय एवं धाम में धैर्य देने वाला धकार है। साथ ही प्रियतम रूपी निर्मल धन प्रद है। अवध ये तीन अक्षर जप करते ही मनुष्य निरन्तर सुखी रहता है। श्रीमहाराज जी कहते हैं कि परम सुखप्रद श्रीधाम वास करने से सभी सुख प्राप्त होते हैं। ॥ ८ ॥

अर्थ--कीट पतंग अश्व मृग आदि श्रीअवध के पवित्र रज के स्पर्श करते ही श्रीअवधधाम के अधिकारी हो जाते हैं। नीच-ऊँच, सम विषम का भेद श्रीअवधधाम ने कभी भी नहीं विचार किया। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि सबको अपने बाहुबल से सदा ही भवसागर पार उतारते हैं ॥ ६ ॥

अर्थ--पंजाब देश के निवासी पाँच चोर महान् पापी थे। वे श्रीअवधधाम चोरी करने के लिये आये, किन्तु श्रीधाम का दर्शन करते ही परम पद पा गये। यह चरित अयोध्या माहात्म्य में प्रसिद्ध है ॥ १० ॥

अर्थ--सच्चिदानन्द के मूल, एवं समस्त मायिक रोगों के हरने वाले विचित्र श्रीअवधधाम हैं। जड़-चेतन जितने भी जीव हैं, वे सभी भग-वान् के स्वरूप हैं। गोलोक आदि धामों के ऐश्वर्य के कारण 'अपराजिता' नाम प्रसिद्ध है। श्रीमहा-राजजी कहते हैं कि श्रीसत्या (श्रीअवध) के निवास से मानव की चिन्मय छटा बढ़ती है ॥ ११ ॥

श्री अवधधाम एक रस अगाध निर्मल बाधा रहित है, अजय अभय दूषित गुणों से रहित श्री-धाम का परम परत्व प्रसिद्ध है। सेकड़ों श्रुतियां श्रीधाम की महिमा वर्णन करती आरही हैं। श्री-महाराज जी कहते हैं कि श्रीजानकीरमणजी की कृपा से ही धाम में अधिकार प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

षटरितु रंग रहस संतत सर सात अनुच्छन न्यारो। युगल विहार बहारदार अवलोकत हरष हजारो॥ जहँ तहँ कमनीय केलि अनुराग दूकान पसारो। युगलानन्य शरन सपनेहु पल पात न धाम विसारो॥ १३॥

अर्थ--छहो ऋतुओं में श्रीसीतारामजी का नित्य बिहार निरन्तर एकरस होता रहता है। श्री-युगलसरकार का बिहार दर्शन से अपार आनन्द होता है। जहां देखिये वहीं अनुरागमयी लीला दूकान पसार कर प्रेमियों को बुला रही है। श्री-महाराज जी कहते हैं कि स्वप्न में भी क्षण-पल भर के लिये श्रीधाम को नहीं भूलना चाहिये ॥१३॥

कोकिल कलित चकोर चारु मुदमय मयूर रुत न्यारो। चातक चक्र चतुर पारावत शुक शारिका संवारो। अपर अनन्त विहंग रंग रस बचन बिचित्र बहारो। युगलानन्य शरन जेहि धुनि सुनि रीझत अवध बिहारो। १४।

अर्थ--कहीं कोकिल चकोर मयूर आदि सुन्दर पक्षियों के मधुर-कलरव सुन पड़ते हैं, कहीं चातक चक्रवाक कबूतर शुक सारिका एवं अन्य पक्षियों के रसमय बचन सुन पड़ते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि इन पक्षियों की ध्वनि सुनकर श्रीराघवेन्द्र अति प्रसन्न होते हैं॥ १४॥

विमल बोध वर विरति रहस रति कोश कोशला सोही है निज प्रकाश पूरन पुनीत जुत जमी जीव मन मोही है। सीताराम सनेह सुधा सुचि सिन्धु सुरस संदोही है। युगलानन्य शरण मन मनसिज मथन निमित्त सरोही है॥ १५॥

विमल ज्ञान, श्रेष्ठ बैराग्य भक्ति रहस्य आदि के कोश (खजाना) होने के कारण कोशला नाम सुशोभित है। अपने पुनीत प्रकाश से जीव के मन को मोह लेती है। श्रीसीताराम जी का पवित्र स्नेह सुधा का सरस सागर ही है। श्री महाराज जी कहते हैं कि कामदेव के मन को मथने के लिये श्री कोशलपुरी अलौकिक शोभा के धाम हैं॥ १५॥

श्रीप्रमोदबन नाम मोद मन मनन मांह चित दीने। चाखे चारु चाह चरचा चित चौगुन नेह नवीने। रास विलास प्रकाश हांस रस रास हुलास मलीने। युगलानन्य सोहाग राग सुख अवध सार आधीने १ ॥

श्री प्रमोद बन यह नाम चित्त लगा कर मनन करने से आनन्द प्राप्त होता है। नित्य लीला दर्शन का स्वाद एवं नवीन नेह चौगुना बढ़ता है। रास-विलाश प्रकाश एवं अनेक विनोदमय अनेक चरित्र होते रहते हैं। श्री महाराज जी कहते हैं, सुख सुहाग अनुराग श्री अवध के ही आधीन हैं॥ १६॥

जब-जब देह धरों कर्मन बश मीच लोक मधि आई। तब तब अवध अधार होय जुत दरश परस सुखदाई॥ दुर्लभतर श्रीधाम वास

जब जब कर्मों के बश शरीर धारण कर मृत्यु-लोक में आना पड़े तब तब श्री अवध मेरे आधार अर्थात् श्री अवध में ही जन्म हो। अवध का ही दर्शन एवं स्पर्श प्राप्त हो, श्रीधाम का निवास अत्यन्त

सियराम कृपा कोउ पाई। युगलानन्य शरण हुलसत हिय वदत सुधाम निकाई ॥ १७ ॥

ही दुर्लभ है। श्री सीताराम जी की कृपा से ही कोई धाम बास पाता है। श्री महाराज जी कहते हैं कि-श्रीधाम की शोभा बर्णन करते ही हृदय आनन्द से भर जाता है ॥ १७ ॥

जे रूखे सूखे भूखे ते आस मजे दुख देशन की जिसके दिल अन्दर नाहीं वर वचन मजा दरवेशन की। समा नहीं फिरने का है अब क्या मतलब बहुवेशन की। युगलानन्य धाम वसिये हठ लीजे लाहु सुकेशन की ॥ १८ ॥

जो भगवद् रस से रूखे एवं सूखे हैं, जो अनंत काल से भूखे हैं वे दुःख रूप नाना देशों की आशा किया करें। जिसके हृदय के भीतर फकीरों के श्रेष्ठ बचन प्रवेश नहीं करते वे दुख उठाया करें। जो बड़भागी हैं उनको इधर उधर भटकने की क्या जरूरत। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि हठ पूर्वक धाम बास करके जन्म का लाभ मनुष्य को ले लेना चाहिये ॥ १८ ॥

धाम निवास दरश पाये बिनु धामी भेंट कहां है। पीट-पीट सिर मूढ़ मुवे भवकुंवे पड़े न लहा है। साधन बिना सिद्ध इतही श्रीवाणी मधुर महा है। युगलानन्य शरण सुधाम बिन कोटिन कलप वहा है। १९ ॥

धाम में निवास एवं दर्शन पाये बिना धामी श्रीराम जी से भेंट कहां से हो सकती है। मूर्ख सिर पीट पीट करके भले ही मर जायें भवकूप में पड़े रहेंगे कुछ भी न मिलेगा। श्री अवध में तो साधन के बिना ही सारी सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। श्री राघवेन्द्र की महामधुर बाणी स्पष्ट है, यथा—

जा मज्जन ते बिनहिं प्रयासा।
मम समीप नर पावहि बासा॥
अति प्रिय मोहि यहाँ के बासी।
मम धामदा पुरी सुख रासी॥

श्री महाराज कहते हैं कि धाम की प्राप्ति के बिना करोड़ों कल्प तक संसार में पड़ना पड़ेगा ॥ १९ ॥

इष्ट धाम मधि अचल बास विश्वास सहित जो करते हैं भुक्ति मुक्ति अभिलाष राख सम मानि ताख पर धरते हैं। समल अविद्या रचित भीत बहु तिससे कभी न डरते हैं। युगलानन्य धाम सेवन विन सदा जनमते मरते हैं ॥ २० ॥

अपने इष्ट धाम से विश्वास के साथ अखण्ड वास करते हैं वे भोग मोक्ष की अभिलाषा राख के समान तुच्छ मान कर ताख पर धर देते हैं। मलिन माया रचित अनेक भय से धाम वासी कभी नहीं डरते। श्रीमहाराज जी कहते हैं जो धाम की सेवा नहीं करते वे सदा जन्म मरण के चक्कर में पड़े रहते हैं ॥ २० ॥

अवध धाम अभिराम निवासी शूकरादि जे जाहिर हैं। बन्दनीय सोऊ त्रिदेव पद पूजित गोप न माहिर हैं। सत चित मोद मयी मूरति इत अग जग अन्तर बाहिर हैं। युगलानन्य शरण परखे कोउ अनुपम बचन जवाहिर हैं २१

सुन्दर श्रीअवधधाम निवासी जितने शूकरादि हैं वे भी त्रिदेवों से बन्दनीय एवं पूजनीय हैं यह बात गुप्त है। यहाँ के जड़ चेतन सभी भीतर बाहर सच्चिदानन्द विग्रह वाले हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि ऐसे अनुपम बचन रूपी रत्नों को परखने वाला जौहरी कोई बिरला ही होगा ॥ २१ ॥

श्रीसाकेत परेश धाम से जौन वियोग करावै। लालच लोभ लगाय हिये बिच कुपथ पयान धरावै। महा अधम शिरमौर भौंर भव सागर मांझ डरावै। युगलानन्य नजर मेरे जड़ पर तेहि जान जरावै। २२॥

परात्पर श्रीसाकेतधाम से जो वियोग कराता है एवं लालच लोभ हृदय में उत्पन्न कर बुरे मार्ग में पांव धरने के लिये प्रेरणा देता है वह अधम शिरोमणि है। वह जीव को भव सागर में डालता है। श्रीमहाराज कहते हैं कि मेरे नजर में वह पुरुष उसका प्राण जलाता है ॥ २२ ॥

श्रीसरयू सरिता स्वामिनि सुचि सुख सर तट गहि रहिये। और देश भव भेश लेश सुख सहित नहीं क्यों बहिये॥ जो कदम्ब संकट आवे तउ गमन कुवाक न कहिये। युगलानन्य धाम मगल मय निरखि हरखि सब सहिये। २३

स्वामिनी श्रीसरयू सरिता का सुखद तट ग्रहण किये रहना चाहिये और संसार सुखद नहीं है अतः अन्यत्र नहीं बहना चाहिए। यदि भारी संकट का समूह भी आवे तो भी गवन, ऐसा कुवाक्य नहीं कहना चाहिये। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि-मंगलमय धाम का दर्शन कर हर्षित होकर सब कुछ सहना चाहिये ॥ २३ ॥

जौन सुथल रमनीय बीच सिय बल्लभ अवध बिहारी। बिचरत वीथिन मांह मनोहर सखन मोहन छवि धारी॥ विविध विनोद रास रचना जित रचत बिहार बहारी। युगलानन्य शरण ऐसो सुख कहु केहि देश अनारी। २४॥

जिस रमणीय स्थल में श्रीअवधबिहारी जानकी बल्लभ बिहार करें जहा की गलियों में सुन्दर शृङ्गार कर सखाओं के सहित विचरें, अनेक रहस्यमय विनोद जहाँ रात दिन होते रहें, श्रीमहाराजजी कहते हैं कि हे अविवेकी ! ऐसे सुखमय धाम को छोड़कर किस देश में जाना चाहते हो?२४

अन्य देश सम्भव सुख सम्पति सिद्धि विचित्र बड़ाई। हालाहल मद असद सुगद रद वद सम समुझ सदाई॥ अपने भवन बीच चिन्तामणि वृथा उपलहित हाई। युगलानन्य-शरन इवही बिधि अवध बास मन भाई॥२५॥

अन्य देश में प्राप्त होने वाली सुख सम्पत्तियाँ तथा विचित्र सिद्धियाँ प्रतिष्ठा आदि को धाम प्रेमी को हलाहल विष के समान एवं बमन के समान समझना चाहिये। जब अपने ही गृह में चिन्तामणि प्राप्त है, तब पत्थर की चिन्ता व्यर्थ है। स्वामी श्रीमद्युगलानन्यशरणजी महाराज कहते हैं कि श्रीधाम का निवास मेरे मन में भाता है ॥२५

अवध स्वरूप बोध बहु बासर बीते लहत सुभागी। श्रीभुसुण्डि वर बचन विचारन योग रंग रस रागी। बार-बार सरकार आप बलि जाहि धाम छवि पागी। युगलानन्य शरन सुधाम से बिमुख विशेष अभागी ॥ २६ ॥

श्रीअवध का स्वरूप बहुत दिन बास करने पर बड़भागी समझ पाते हैं। श्रीकाकभुसुन्डी जी का भक्तिरस युक्त बचन विचारने योग्य है।

अब जाना मैं अवध प्रभावा।
निगमागम पुरान श्रुति गावा॥
कवनेउ जनम अवध बस जोई।
राम परायण सो परि होई॥

बार बार श्रीराघवेन्द्र सरकार स्वयं श्रीअवध-धाम पर बलिहारी जाते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि ऐसे सुन्दर धाम से जो बिमुख है वह अभागी है ॥ २६ ॥

बिशद विरक्त वेश धारन करि विपुल कुदेशन दौरें। नीर सीर से हीन वारि मृग मूढ़ ताहि मधि पौरें। तीरथ करत बितावें आयुष सुख म्रुरुह नहिं बौरें। युगलानन्य शरन निज हित सठ सपनेहुं सजत न गौरें ॥ २७ ॥

स्वच्छ विरक्त वेश धरकर जो बहुत से बुरे देशों में दौड़ते रहते हैं वे शीतल जल रहित मृग तृष्णा के जल में तैरते हैं। तीर्थ करते हुए समस्त आयु समाप्त कर देते हैं किन्तु सुख रूपी वृक्ष कभी भी नहीं सफल होता। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि ऐसे सठ लोग अपने हित के विषय में तनिक भी विचार नहीं करते ॥ २७ ॥

श्रीकौशला अवध सत्या साकेत अयोध्या प्यारी। अपराजिता अमल विमला सुचि सत्य लोक श्रमहारी। श्रीसुन्दर प्रमोदबन मत चित घन आनन्द विहारी। युगलानन्य शरन रघुबर-पुर नाम परम मुदकारी ॥ २८ ॥

श्रीकोशला, अवध, सत्या, साकेत, अयोध्या, अपराजिता विमला, सत्यलोक, श्रीप्रमोदबन आदि नाम सच्चिदानन्द रूप हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीरघुबर के पुरी के ये नाम परमानन्द देने वाले हैं ॥ २८ ॥

ज्ञान विधान प्रधान नेह रस रहस उछाह सोहावन। ध्यान ध्येय धारणा धर्म प्रिय परम छेम छवि छावन। योग राग भव भोग शोग विन बिलमत विशद विभावन युगलानन्य शरन सब सुख को कोश कोशला पावन ॥ २९ ॥

श्रीअवध में ज्ञान का भाण्डार है, किन्तु प्रधान रूप से प्रेमरसरहस्य का उत्साह भरा है। ध्यान ध्येय धारणा धर्म एवं परम कुशल की छवि छा रही है। शोक रहित भोग के सहित योग यहाँ सुशोभित है। श्रीमहाराज जी कहते हैं कि श्रीअयोध्या जी समस्त सुख के पवित्र खजाना हैं ॥ २९ ॥

परम प्रमोद विनोद सार सुचि सरस सरोद सजाई। साधन साध्य सकल सीवां श्रीअवध

परम प्रमोद विनोद सार का सुन्दर पवित्र सरोवर है। साधन साध्य सबकी सीमा श्रीअवध में विचित्र बनी है। बासुदेव का भी धारक एवं

अजूब रचाई। बासुदेव धारक तारक तम त्रान हेतु श्रुति गाई। युगलानन्यशरन वध विन जहं अगजग विमल बड़ाई ॥ ३० ॥

अविद्या पार करने वाली अयोध्या को श्रुति गाती है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि जहाँ चराचर जीव का वध नहीं होता है यह श्रीअवध की निर्मल महिमा है ॥ ३० ॥

सत्य स्वरूप अनूप ब्रह्म जेहि सुछवि अंश करि छाजें। अथवा सत्य रहस संयुत निशि द्योश सुछिति पर राजें ॥ असत अविद्या हरनि करनि आनन्द भरनि सुख साजें। युगलानन्य धाम सत्या सब सुकृत शिरोमनि साजें ३१ ॥

सत्य स्वरूप अनूप ब्रह्म जिस अवधधाम के प्रकाश के अंश से शोभित हैं। अथवा रात दिन सत्य रहस्य के संयुक्त यह पृथ्वी पर विराजमान हैं, असत् अविद्या को हरने वाली, आनन्द को भरने वाली एवं समस्त सुख साज सजने वाली हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि समस्त सुकृतों के शिरोमणि श्रीसत्या (श्री अयोध्या) धाम सुशोभित हैं ॥ ३१ ॥

विधि हरिहर शोभा वैभव विस्तार हेतु अविकारी। दिव्य नव्य भल भव्य केत अनिकेत सचेत विहारी। माया गुन कुल कर्म काल कृत केश रहित दुतिधारी। युगलानन्य शरन अद्भुत साकेत परत्व प्रचारी ॥ ३२ ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महेश के सौन्दर्य एवं वैभव को विस्तार करने वाली विकार रहित अयोध्या हैं। नवीन दिव्य सुन्दर विहार स्थल चिन्मय विराज रहे हैं। मायिक गुण एवं काल-कर्म कृत विकार से रहित प्रकाशमान श्रीअवध है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीसाकेत का अद्भुत् परत्व प्रसिद्ध है ॥३२॥

प्रवल अविद्या सेन जंग जेहि संग करत हिय हारें, जैसे तम तरनी समीप नहीं जाय सके श्रमधारें। पंचानन अवलोकि अमित जम्बुक ज्यों जान विसारें। युगलानन्य शरन तीनों सुर ध्यावत साँझ सबारे ॥ ३३ ॥

प्रवल अविद्या की सेना जिससे युद्ध करने में हृदय से हार जाती है जैसे श्रम करने पर भी अन्धकार सूर्य के पास नहीं पहुंच सकता है, तथा सिंह को देखकर अनेकों गीदड़ों के प्राण सूख जाते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि सायं प्रातः त्रिदेव श्रीअवध का ध्यान करते रहते हैं ॥ ३३ ॥

कोटिन कल्प कलाप जाय तऊ ताप न नेक व्यापै। विजय विभूति विचित्र एक रस नीरस पन तन ठाँपै ॥ सबला प्रकृति प्रपंच निरंतर निरखत थर थर काँपै। युगलानन्य पराजय बिनु श्री अपराजिता प्रतापै ॥ ३४ ॥

करोड़ों कल्प समूह व्यतीत होने पर भी तनिक भी ताप नहीं व्यापते हैं। एकरस विचित्र विजयविभूति यहाँ बनी रहती है, हृदयमें नीरसता नहीं आतीहै। अत्यन्त प्रवल प्रकृति प्रपंच श्रीअवध को देखकर थर-थर काँपते है। श्रीमहाराज जी कहते हैं कि किसी भी प्रकार से जिसकी पराजय नहीं हो इसी प्रताप के कारण श्रीअवध का नाम वेद में एक 'अपराजिता' भी है ॥ ३४ ॥

प्राकृत मल पल पाव न परसत परम पावनी विमला। सिय पिय पद प्रतिकूल शूल श्रम मूल निकन्दन अमला॥ जेहिं सेवहिं शारदा शिवा मंजि सरस सनेह सुकमला। युगलानन्य अकथ महिमा क्यों जाने मम मति समला॥ ३५॥

प्राकृतमल एक क्षण भी स्पर्श नहीं करता, इसीलिए श्रीअवध का एक नाम विमला है। श्री-सीतापति के चरण कमल प्रेम के प्रतिकूल श्रम-मूलक शूल को काटने में समर्थ है। लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती आदि अत्यन्त प्रेम के साथ जिनका सेवन करती रहती हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि ऐसी अकथ महिमा को मेरी मलीन मति क्या जान सकती है॥ ३५॥

सत्यलोक अविशोक आक जहँ रोक टोक जग नाहीं। चहूं ओर सुख शोर जोर चित जगमग जोत लखाहीं॥ थिर चर जिते तिते प्रीतम रस प्यार पगे मन माहीं। युगलानन्यशरन कुँजन प्रति लसत कलपद्रुम छाहीं॥ ३६॥

श्रीअवध का एक नाम सत्य लोक है। जहाँ शोक रहित स्थान है एवं किसी के लिए रोक टोक नहीं है। चारों ओर सुख का ही शोर है जहाँ सभी सुखी हैं, परमप्रकाशमयज्योति चित में प्रकाशित होती है। यहां जितने भी जड़ चेतन हैं उन सबका मन प्रियतम के प्रेम रस सागर में डूबा रहता है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि कुञ्ज-कुञ्ज प्रति कल्पवृक्ष की छाया शोभा पारही हैं॥३६॥

जहां जाय दरसाय दमक दुति दायम अजब अनोखी। परमा प्रीति पुनीत चारु चित चढ़े चौगुनी चोखी रैन ऐन दम्पति विनोद प्रिय परिकर तन मन पोखी। युगलानन्य प्रमोद विपिन बसु तजु जग धोखा धोखी॥ ३७॥

जहाँ जाइये वहीं विलक्षण प्रकाशमय वस्तुएँ दीखती हैं, जिनके दर्शन से ही परम प्रेम हृदय में उमड़ता है। यहाँ रात दिन श्रीयुगलकिशोर की मधुर लीलायें होती रहती हैं. जिनको देखकर परिकरों के शरीर मन पुष्ट रहते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीप्रमोद विपिन में निवास करो तथा जगत् के धोखे से बचो॥ ३७॥

श्रीसीतावर धाम बसे जे सज्जन सरल सलोने। तिन पद पंकज भूरि भूरि मम भाल हमेश ललोने। मजुल अर्थ समर्थ अवध अनवधि कछु कह्यो खिलौने। युगलानन्य शरन धामहि भजु तजु सब विश्व अलोने॥ ३८॥

जो बड़भागी श्रीसीतारामजीके धाम में निवास करते हैं, उनके श्रीचरण कमलों की धूलि मेरे मस्तक पर सदा शोभित रहे। श्रीअवध का सुन्दर अर्थ अवधि रहित है केवल स्वान्तः सुखाय अथवा विनोद के लिए कुछ कहे गये। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीधाम में निवास करो तथा नीरस सभी जग का परित्याग करो॥ ३८॥

ॐ श्रीअवध अलौकिक अतुलित अगम अगोचर महिमा। सिय रघुबर उर विशद मोद सुविनोद देन गुन गरिमा॥ सकृत नमत धमत काम कज कहर लहर हिय अनिमा युगलानन्य शरन व्यापक ब्रह्माण्ड तेज गुरु लघिमा॥३९॥

श्रीअवध का अलौकिक गुण, अतुलित, अगोचर महिमा की जय हो। श्रीअवध की गुण गरिमा तो श्रीसीतारामजी के हृदय को भी मोद विनोद देने वाली है। जो लोग एक बार श्रीअवध को साष्टांग करते हैं उनके हृदय के काम आदि समस्त विकार दूर हो जाते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीअवध का व्यापक तेज समस्त ब्रह्माण्ड के तेजों को लघु कर देता है॥ ३९॥

सत्यासत्य मार सुख दुख बिनु दिनकर दुति तमतरनी। साज समाज सुराज काज कर काटत कर्म कतरनी॥ स्वाभाविक उत्साह चाह चय उदय हेत वर वरनी युगलानन्य अखिल जीवन की जारत जिय जग जरनी। ४०।

श्रीअवध सत्य असत्य का बोधक सुख दुःख रहित अन्धकार नाश करने के लिए सूर्य के समान है। श्रीअवध का साज समाज समस्त कर्मों को काट देता है। स्वाभाविक उत्साह चाह को बढ़ाने वाली श्रीअयोध्या है। श्रीमहाराज जी कहते हैं कि समस्त जीवों के हृदय ताप को दूर कर देती है॥ ४०॥

नित्य निरीह निरूप निरामय निर्गुन जो कहावै। सोऊ धाम आवरण अन्तर अद्भुत झलक लखावै॥ धाम महत्व परत्व परे कछु दूजो नजर न आवै। युगलानन्य शरण इत रहि श्रमहीन परम पद पावै।४१॥

नित्य निरीह रूप रहित निरामय निर्गुण जो ब्रह्म कहलाता है, वह भी श्रीधाम के आवरण के अन्तर्गत ही प्रकाशित हो रहा है। श्रीधाम के महत्व परत्व के आगे दूसरी वस्तु कुछ भी नजर नहीं आती है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि यहाँ श्रम के बिना परम पद की प्राप्ति होती है॥ ४१॥

छाके युगल किशोर नाम गुण लीला ललित लल मी ताके तरफ नही इत उत श्रीअवध सुधाम मोकामी। श्रीकोशला वास से सब सुख परम पियूष मुदामी युगलानन्य-शरन धामहि तजि अनत रमत वदनामी॥४२॥

जो बड़भागी अवधबासी श्रीयुगलकिशोर के ललित नामरूप लीला के अनुरागी हैं वे इधर-उधर नहीं दृष्टि डालते हैं। श्रीअवध बास मे परम पीयूष मय मोद एवं सब सुख प्राप्त होते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीधाम छोड़कर अन्यत्र घूमना बदनामी है॥ ४२॥

श्रीसरयू शुचि स्वच्छ सुरज सम स्वाद नहीं कोई लोकन में कोटि कोटि बैकुण्ठ निछावर अवध शहर प्रिय ओकन में॥ ध्येय विष्णु

श्रीसरयू जी के पवित्र एवं स्वच्छरज के समान स्वाद किसी लोक में नहीं है। श्रीअवध नगर के प्रिय महलों के ऊपर करोड़ों २ बैकुण्ठ न्यवछावर हैं। श्रीहरि नारायण आदि के ध्येय हैं। शोक

नारायणादि सब ईश मुनीश अशोकन में । युगलानन्यशरन सपनेहुँ नहिं चाह अपर अव-लोकन में ॥ ४३ ॥

रहित होकर ईश मुनीशगण ध्यान किया करते हैं, श्रीमहाराजजी कहते हैं कि अब स्वप्न में भी और अवलोकन की इच्छा नहीं रह गयी ॥ ४३ ॥

परे रहो अलमस्त दिवाने श्रीसरयू सुचि तीरों में। जहां भुक्ति भल मुक्ति शुक्ति सम मारी फिरे सुवीरों में ॥ महामोद मंदिर मोहन मन लहर तरंग समीरों में। युगलानन्य सुधाम बास सजु मतलब कौन अहीरों में ॥ ४४ ॥

अलमस्त दिवाने बनकर श्रीसरयू के पवित्र तीरों में पड़े रहो। जहाँ भोग मोक्ष सीपी के समान मारे फिरते हैं। श्रीसरयू के तरंगों को स्पर्श करने वाली हवा से महान् मोद मिलता है। मन मोहित हो जाता है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीधाम में बास सजो अन्य बुरे देशों से क्या मतलब ॥ ४४ ॥

जिसने अवध अजूब खूब नहिं स्वाद लिया सुख सीरों में। तिसकी कभी नहीं गिनती कोइ-काल अमीर फकीरों में ॥ मान-दान सनमान नहीं उह पावे निज रस धीरों में। युगलानन्य-शरन रमिरहु इत काम न जगत वहीरों में ॥ ४५ ॥

जिसने श्रीअवध बास का अनुपम सुख नहीं प्राप्त किया अमीर फकीरों में अथवा श्रेष्ठ सन्तों में उसकी गणना कभी नहीं होती। रसिक भक्तों के बीच में कभी सम्मान नहीं पाते। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीअवधधाम में रम जाओ, बाहर जगत से कुछ भी काम नहीं ॥ ४५ ॥

श्रीकोशलपुर बसे विमल मन ते जन सहज सोहाये हैं। जननी पय पोवत नाहीं जो श्रीसरयू जल पाये हैं ॥ परम प्राण बल्लभ सीय बल्लभ सो सब भाँति सुभाये हैं। युगला-नन्यशरन धोखा मतवाद विकार दहाये हैं ॥ ४६ ॥

जो जन श्रीअवध वास करते हैं वे स्वाभाविक शोभा पाते हैं। जो श्री सरयू जलपान करते हैं वे पुनः माता के स्थन पान नहीं करते अर्थात् पुन-र्जन्म नहीं होता। प्राण बल्लभ श्रीसीतारामजी को वे ही सब प्रकार से प्रिय लगते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि अन्य मतवाद एवं विकार को धोखा समझकर धाम बासी सर्वथा त्याग देते हैं ॥ ४६ ॥

भींजे रहे रहस्य अवध मर सुन्दर देश भुलाये हैं। ऊँची नजर निगाह नहीं झूकि जीवन जान भुलाये हैं ॥ विचरें अवध गली हम तुम तजि मंजुल कमल फुलाये हैं। युगला-नन्य शरन ऐसे अनमोल सुवस्तु भुलाये हैं ॥ ४७ ॥

श्रीअवध के रहस्य में बड़भागी भींजे रहते हैं। इस सुन्दर देश में भूले रहते हैं। इसको छोड़कर कहीं भी ऊँची दृष्टि नहीं जाती, अपने जीवन को यहीं अर्पित कर चुके हैं। हम तुम द्वैत छोड़कर श्रीअवध की गलियों में विचरते हैं। अपने हृदय कमल को सदा विकसित रखते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि ऐसे अमूल्य पदार्थ पाये हैं कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता ॥ ४७ ॥

गली गली रस थली भली छवि मिली मनोहरताई है। युगलकिशोर चोर चितवन हर तरफ रंग बरसाई है। जावे जिधर निगाह उधर दिलदार झलक झलकाई है।। युगलानन्यशरन कोशलपुर दश दिशि ज्योति जगाई है।। ४८ ।।

मदन सदन वर बाग राग अनुराग दिमाग दमंके हैं। बदन-बदन प्रिय राग विलक्षण मधुर सुचारु चमंके हैं।। मदन-मदन नर नारि नेह निधि छकि छबि छमकि छमंके हैं। युगलानन्य शरण धामहि मधि रास रहस्य रमंके हैं।। ४९ ।।

सियबल्लभ छबि अकथ मिलन उत्साह जो मन में लाते हौ। तौ बे बूझ समझ इत उत नाहक ही गोता खाते हौ।। बसो आय सरयू तट में क्यों घर बैठे अलसाते हौ। युगलानन्यशरण मानिक निज निकट निरखि बहवाते हौ। ५०।

छन पल निमिष वास फल भल चल अचल सुथल प्रिय पावे। सतचित घन सों होत जोत जिय जगमगात प्रगटावे।। बड़भागी अनुरागी सो जो सदा सनेह समावे। युगलानन्य शरण सब विधि सो सिय पिय अति अपनावे।। ५१।।

वृथा विगोये बोध विगत मत भ्रमत आह दिशि दौरे हैं। संत संग रस रंग रंगे बिनु मांगत घर घर कौरे हैं। धाम प्रमोद निवास खास तजि तुषश्रम हेत पछोरे हैं। युगलानन्य शरण समुझे नहिं अवध रूप मति बौरे हैं। ५२ ।।

यहां गली-गली में सुन्दर छवि युक्त रस के स्थल सुशोभित हैं। चितचोर युगल किशोर की चारु चितवन चारों ओर रस रंग बर्षारही हैं। जिधर दृष्टि जाती है, उधर हृदय-रमण प्रियतम की झलक दीख पड़ती है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीकोशलपुर दशों दिशाओं में चिन्मय ज्योति जगमगा रही है।। ४८ ।।

घर-घर में अनुराग की बाटिका लहरा रही है। प्रत्येक धामबासी के मुख कमल पर मधुररस चमक रहे हैं, एवं सभी स्त्री-पुरुष प्रेमसागर में डूबे हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीधाममें ही तो रास रहस्य रमक रहे हैं।। ४९ ।।

श्रीसीतारामजी के दर्शन के लिए यदि हृदय में उत्साह है तो अज्ञानबश धाम छोड़कर व्यर्थ ही इधर-उधर गोता लगाते हो, भटकते हो। श्रीसरयू तट में आकर बस जाओ, क्यों घर बैठे अलसाते हो। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि समीप में माणिक्य देखते हुए भी अपने हाथों से फेंक रहे हो ।। ५० ।।

एक क्षण-पल निवास करने मात्र से प्रियतम की नित्य स्थल की प्राप्ति होती है। उसके हृदय में सच्चिदानन्दमयी ज्योति जगमगाने लगती है। जो बड़भागी सदा निवास करते हैं, वे तो प्रियतम के स्नेह सागर में मग्न रहते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि उनको तो श्रीजानकीबल्लभजी अपनी ओर से सभी प्रकार से अपनाते हैं।। ५१ ।।

अज्ञानी जीव अन्य देशों में दौड़कर व्यर्थ में नष्ट हो रहे हैं। सन्तों के संग के बिना रसरंग से रहित घर-घर में टुकडे माँगते फिरते हैं। आनन्द-मय धाम के बास को छोड़कर भूसा कूटकर श्रमित हो रहे हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि ऐसे बुद्धि हीन पागल श्रीधाम का महत्व नहीं समझ सकते ।।५२

श्री श्रीअवध धाम धामाधिप प्रवल परत्व प्रवाही है। जिनके आस पास तीरथ गण सोहत सदृश सिपाही है ॥ नेक निगाह करत तारत जन श्रुति सत सुमति सराही है। युगलानन्य शरण सुधाम वसि निशि दिन बे परवाही है ।५३

श्रीअवधधाम सभी धामों के स्वामी हैं, अवध की महिमा वेद-शास्त्र में विख्यात है। जिनके आस पास सभी तीर्थ सिपाही की तरह शोभा पा रहे हैं। जिस जन के ऊपर श्रीअवध का तनिक कटाक्ष पड़ जाता है वह संसार से पार हो जाता है। सैकड़ों श्रुतियाँ ऐसी प्रशंसा की हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीधाम में निरंतर बास करो तथा समस्त चिन्ताओं से मुक्त हो जाओ ॥ ५३ ॥

जैसे सर रस रहित सुतनु प्रिय प्राण विहीन न छाजे। वामा विधु बदनी बर बिनु जिमि वेश बोध बिनुराजे। नृपबिनु देश धनेश दानबिनु विभव विगत सुरराजे। युगलानन्य सुधाम नेह बिनु नाहक संत समाजे ॥ ५४ ॥

जिस प्रकार जल से रहित सरोवर की शोभा नहीं है, जैसे चन्द्रमुखी नायिका पति के बिना शोभा नहीं पाती, जैसे ज्ञान के बिना वेषधारी साधु शोभा नहीं पाते। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि इसी प्रकार धाम प्रेम के बिना संत समाज शोभा नहीं पाता है ॥ ५४ ॥

इष्ट मिष्ट रस रहस रीति सुपुनीति प्रीति दति वाली। पावे कहाँ सुधाम अवध बर बास बिना मुद माली। चाहे पचे मचे साधन सम्प्रदाय मध्य चिरकाली युगलानन्य शरण सिय पिय की चढ़ै न चित विच लाली ॥ ५५ ॥

इष्टदेव का रसमय रहस्य एवं चिन्मय पुनीत प्रीति रीति श्रीअवध बास के बिना कैसे मिल सकती है। चाहे कोई बहुत काल तक कठिन साधनों को करते हुए पच-पच मर जाय। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीधाम बास के बिना श्रीलाड़लीलालजी की लाली नहीं चढ़ सकती ॥ ५५ ॥

बनवापी सर सुभग गली बाजार बीच छबि देखो। युगलकिशोर छटा अनुपम फबि फैली खूब परेखो। अगनित कलित कलाकर दिनकर जोत तुच्छतर पेखो युगलानन्य शरण ईशन की गनती तहाँ न लेखो ॥ ५६ ।

श्रीअवध के बन उपवन वापी तड़ाग एवं गली बाजार आदि के बीच छवि तो देखो! सर्वत्र श्रीयुगलकिशोर की अनुपम छटा फैल रही है। जिनके समक्ष अनेकों सूर्य की प्रभा तुच्छ प्रतीत होती है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि इस अनुपम प्रकाश के समक्ष अन्य ईशों की गणना व्यर्थ है ॥ ५६ ॥

पुर वैकुण्ठ क्षीर सागर गोलोक आदि लोकों में। रहत एक ही हरी हरण तम अगम सोऊ शोकों में। सप्तहरी विख्यात अवध सेवत

श्रीवैकुण्ठ, क्षीर सागर एवं गोलोक आदि लोकों में एक ही श्रीहरि निवास करते हैं जो भक्तों के अज्ञानरूपी अन्धकार को दूर करते रहते हैं, किन्तु श्रीअवध का सेवन तो सुख पूर्वक सप्तहरि करते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि जब श्रीहरि सात रूपों

सुख सजि नोकों में। श्रीयुगलानन्य धाम सेवन करु मत अटको गोकों में॥ ५७॥

कई कोट अवतार जगत उद्धार हेत जो आते हैं। सो सब श्री साकेत कला के अंश प्रशंस प्रभाते हैं॥ परंब्रह्म अद्वैत अचल अनवद्य धाम दुति माते हैं। युगलानन्य मरम महरम बिन बार बार पछताते हैं॥ ५८।

काई कुमति कठिन नाना मत असत हिये जमकाई है। छाई छांह छलन संगति की कलिमल कहर कलाई है॥ सांई साथ सनेह कियो नहिं सपनेहूं सुख पाई है। युगलानन्य धाम अद्भुद गत क्यों जाने जड़ताई है॥५६॥

घर २ फाँकत फिरत मुक्ति कोउ लेव हमें हम आई हैं। दर दर रंक समान घूमती को पूछे भरमाई है॥ छवि निधि छैल छटा छाके दिन रैन रमन रशिकाई है। युगलानन्य शरण सिय पिय की प्रीति छनहिं छन छाई है॥ ६०॥

मतवालों की दशा निशा निज नैन बैन में चढ़ती है। वारक नेह समेत अवध सरयू पर जब रूचि बढ़ती है! विविध वासना वृन्द मन्द देशादि कलपना कढ़ती है युगलानन्य सुहेम हियेमनि प्रीति मनोहर मढ़ती है॥ ६१॥

से श्रीअवध का सेवन कर रहे हैं, अन्य जीवों की तो बात ही क्या। अतः हे धाम प्रेमियों! आप अवश्य धाम सेवन करो, किसी के रोकने से मत रुको॥ ५७॥

अनन्त कोटि अवतार जगत के उद्धार के लिए अवतीर्ण होते हैं। वे सभी श्रीअवध के अंश कलाओं से प्रकाशित हैं। अद्वैत अचल अनवद्य निर्गुण ब्रह्म भी धाम के प्रकाश से प्रकाशित हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि इस रहस्य को न जानने के कारण ही लोग बार २ पश्चाताप करते हैं॥५८॥

कठिन काई लग जाने के कारण दुर्बुद्धि लोग अनेकों असत्य मतों को अपने हृदय में जमाये रहते हैं। दुष्टों के कुसंगों के कारण कलिमल से घिरे रहते हैं। अपने स्वामी के साथ स्नेह न करने के कारण स्वप्न में भी सुख नहीं पाते। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि ऐसे लोग धाम के अद्भुत रहस्य को क्या जानें॥ ५६॥

श्रीअवध धाम में मुक्ति घर में झाँकती फिरती हैं और कहती फिरती हैं कि हम मुक्ति हैं हमको कोई ले ले। रंक के समान द्वार २ इसी तरह घूमती रहती है, किन्तु यहां मुक्ति को कौन पूछता है। श्रीअवध में तो छैल छबीले, रसिकेन्द्र श्रीराघवेन्द्र के सौन्दर्य माधुर्य में सभी लोग निमग्न रहते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि यहाँ तो श्रीजानकीरमणजी का प्रेम क्षण २ में सर्वत्र छाया रहता है॥६०॥

एक बार भी स्नेह के साथ जब श्रीअवध सरयू की ओर रुचि बढ़ती है तब मतवाला की दशा के समान धाम प्रेम नेत्र एवं बचनों में छा जाता है। अनेकों वासनाएँ एवं अन्य चमकावे देश वास की कल्पनायें उसी क्षण नष्ट हो जाती हैं, श्रीमहाराजजी कहते हैं कि कञ्चनरूपी हृदय में प्रीतिरूपी मनि मढ़ जाती हैं॥ ६१॥

अहो भाग अनुराग अलौकिक बसे धाम जे प्यारे। लोक कदंब आश नाशन करि निरखे नजर बिहारे॥ खटका खोफ खेद खाहिश बेबाक किये मन मारे। युगलानन्य शरण सोई बस कीने राज दुलारे॥ ६२॥

जो बड़भागी हैं वे अलौकिक अनुराग के साथ धाम बास करते हैं! लोक समूहों की आशा को नष्ट करके श्रीयुगल बिहार का अवलोकन करते हैं, जो अन्य कामनाओं से मन को मार कर सभी चिन्ताओं से दूर रहते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि राजकुमार श्रीराघवेन्द्र को वही बस कर सकते हैं॥ ६२॥

अमल अनन्य सुव्रत छेदन बिन अविछिन्न दिनराती। निबहे नेह नाम रूपादिक माँझ समच्छ विभाती॥ धाम मध्य रस एक रहत उर संतत संग सजाती। युगलानन्य धाम वसि के पुनि चाह न जगत विजाती॥ ६३॥

श्रीधाम में एक रस सजातीय संतों का संग सदा रहता है। अतः श्रीसीतारामजी के नाम रूप लीला धाम का सेवन अनन्यता के साथ रात दिन अखंड एवं अबाध रूप से होता रहता है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि धाम में निवास करने के बाद विजातीय जगत की इच्छा नहीं रह जाती॥ ६ ॥

जेते वेद विदित अद्भुत वैकुण्ठ तिते सब आवे। श्री साकेत दरश मुजरा करि पुनि निज सदन सिधावे। को वाकिफ इह मरम कृपा विनु सुनि गुनि चित चमकावे। युगलानन्य शरण अज्ञन के मानस मांह न भावे॥ ६४॥

वेद विदित जितने भी श्रीवैकुण्ठ आदि धाम हैं, वे सभी श्रीअवध का दर्शन कर हाजिरी देकर अपने-अपने घर लौट जाते हैं। इस रहस्य को कृपा के बिना कौन जान सकता है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि अज्ञानी जन इस रहस्य को सुनते ही भड़क उठते हैं, उनके मनमें यह बात नहीं बैठती॥६४

धाम अधार रहत धामी निज नामी नैन निहारे। धाम समेत परत्व परम मुद मोद उमंग अपारे॥ केवल इष्ट दरश कीन्हें पर तदपि न रहस वहारे। युगलानन्य शरण धामी सुख इतहीं सरस संवारे॥ ६५॥

धाम के आधार पर ही धामी रहता है जैसे नाम के आधार पर नामी। धाम के साथ ही धामी (श्रीरामजी) का परम तत्व एवं अपार रहस्य रहता है। यदि धाम के अतिरिक्त इष्टदेव का दर्शन हो भी जाय, तो पर भी धाम के बिना रहस्य का आनन्द नहीं मिल सकता। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि धामी श्री रघुनन्दन का सरस विहार यहीं है॥ ६५॥

जीवन मुक्त महा पदवी सोउ धाम बसत अनयासे। पावै कीट पतंग रग रस सहित विचित्र विलासे॥ रैन ऐन प्रिय सुजस बैन में छकैं नैन उर आशे। युगलानन्य शरण अन्तर सियलाल सनेह विकाशे॥ ६॥

कीट पतंग आदि भी धाम में निवास द्वारा अनायास ही जीवन मुक्त प्राप्त करते हैं, रात दिन सभी के हृदय वाणी एवं नेत्र में श्रीसीतारामजी की कमनीय कीर्ति बसी रहती है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि सभी के हृदय में श्रीजानकीवल्लभजू का स्नेह भरा रहता है॥ ६६॥

कौन कहै श्री अवध कहानी रस खानी मनमानी है। प्राणी प्रीति करत पावत परमेश सुपद रजधानी है। जहाँ जगमगो सरितवरा श्रीसरयू श्री महारानी है। युगलानन्य शरण नेहिन की निर्मल नेह निसानी है। ६७।

संशय शूल हूल नानामत मूल भूल खनि डारे। श्री सरयू सुचितम तरंग भव भंग हेत छविधारे।। गौर स्याम अनुराग अमल लखि परम प्रवाह बहारे। युगलानन्य महा मंगल निशिवासर सुतट सँवारे।। ६८।।

श्री श्री सरित सिरोमनि स्वामिनि श्री सरयू छवि रामी। तरल तरंग उमंग रंग भरि भाव विभाव विभाशी। लहर कहर नाशन सुख काशन भासन भवन निवासी। युगलानन्य शरण की जीवनि काटति भ्रम श्रम फाँशी। ६६

रेनु अमित कलकाम धेनु से अधिक प्रभाव प्रभासी। स्वच्छ सोहावन स्वाद सार रस सुधा सलिल सुखरासी।। युगल तीर कमनीय कुँज रमनीय केलिथल काशी। युगलानन्य शरण चिंतामनि मेरी प्राण प्रियासी।। ७०।।

सुद्ध सत्व सामीप परंपद समता सरस सोहावन। सरणागत सुठि सुष्ट शरण सुख शर्म स्वाद सरसावन। सुखमा सुधा सरोवर सुन्दर समीचीनता सावन। युगलानन्य शरण संपति सब सुभग सकार समावन।। ७१।।

श्रीअवध धाम की रसमयी अकथ कथा को कौन कह सकता है। बस मन अवध रस में डूबा रहता है। जो प्राणी अवध से प्रीति करता है वह श्री-सीताराम जी के श्रीचरणों में निवास प्राप्त करता है। जहां सरिता शिरोमणि श्रीसरयू जैसी महारानी विराजमान हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि प्रेमियों के लिये श्रीअवध निर्मल प्रेम के प्रतीक हैं ।। ६७।।

श्रीसरयूजी की प्रबल धारा समस्त संसय शूल आदि को मूल से उखाड़ डालती है। श्रीसरयू की शुचितम तरंगों की छवि का दर्शन भव को नाश कर देती है। प्रवाह के विलास को देखते ही गौर श्याम श्री युगलकिशोर के प्रति अनुराग उत्पन्न होता है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीसरयूतट निवास करने से रात दिन महामंगल होताहै ।।६८।।

सरिता शिरोमणि श्रीसरयूजी की छवि एवं इनकी तरल तरंगों के दर्शन से दिव्य भाव का विकाश होता है, विकारों को दमन कर सुख प्रदान करती हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीसरयूजी मेरी जीवनि हैं। भ्रमरूपी फाँसी को काटने वाली हैं।। ६६।।

श्रीसरयूजी की रेणुका अमित कामधेनु से बढ़ कर भी प्रभाव युक्त हैं। अमृत के समान स्वाद, स्वच्छ श्रीसरयूजी का जल है। दोनों तटों में कम-नीय क्रीड़ा कुँज प्रकाशित हो रहे हैं। श्रीमहाराज-जी कहते हैं कि मेरे प्राणों से भी प्रिय चिन्तामणि के समान हैं।। ७०।।

(अब श्रीसरयूजी का शब्दार्थ कहते हैं) शुद्ध सत्व सामीप्य परमपद सुन्दर समता एवं शरणा-गतों को परम सुख देने वाला सकार है। श्रीमहा-राजजी कहते हैं कि सुषमा सुधा का सरोवर एवं समस्त अलौकिक सम्पत्ति सकार में समाया हुआ है।। ७१।।

रहस रंग रमनीय रमनता रास राग रव नीको। रूप रीति रस राजराह रविरमा रसा, रति टीको ॥ राहत रसम रशिकताई राजीव मनोहर तीको। युगलानन्य रफीक रमन रन रुचिर रकार सुठीको ॥ ७२ ॥

(अब रकार का अर्थ कहते हैं) रमणीय रास रहस्य राग-रंग-रूप रसराज का मार्ग एवं रवि, रमा, रति आदि से श्रेष्ठ रसिकों के लिए परम सुखदायक रकार है ॥ ७२

जश जीवन जन जान जवाहिर जगमगात जग जाहिर। यम जालिम मद मथन जहर युग जारन जशो सुमाहिर ॥ जती जमात जके गावत गुन जयति सुअन्तर बाहिर। युगलानन्य शरण सरयू श्री वरन विचित्र विथाहिर ॥ ७३ ॥

यश जीवन जन का सर्वस्व जवाहर के समान प्रकाशमान, यमराज के मद को मथन करने वाला, यतियों का समाज जिनके गुणों का गान करता रहता है जो भीतर बाहर सदा एक रस हैं। श्री-महाराजजी कहते हैं कि इस प्रकार यकार प्रतिपादित होता है । श्री सरयू जी के तीनों वर्ण विचित्र हैं ॥ ७३ ॥

अवध धाम अभिराम नाम जो तारक जीव उचारे। तापै रीझ रहे रस सागर नागर राज दुलारे॥ जन्म अनेक कदंब पंक वहि जात बिशेष बिकारे। युगलानन्य धाम दरशन फल अद्भुत सब सुख सारे ॥ ७४ ॥

जो जीव श्रीअवधधाम का नाम एक बार उच्चारण करता है, उस पर रससागर चतुरचूड़ामणि श्रीराघवेन्द्र रीझ जाते हैं। अनेक जन्म समूह के विकार दूर हो जाते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीधामके दर्शन का फल अद्भुत सुखमयहै॥७४

धाम निवासी जिते तिते सब सियबर सहज सनेही। तिनमें प्रीति प्रतीति रीति रस नीति करे सम गेही ॥ इष्ट विभूति स्वरूप निरन्तर भेद तजे जड़ देही । युगलानन्य उपासक सो सब भांति विचित्र निरेही ॥ ७५ ॥

धाम निवासी जितने हैं वे सभी श्रीसीताराम जी के सनेही हैं। उनके प्रति प्रीति प्रतीत आवश्यक है। जड देह का भेद छोड़कर इष्ट के विभूति रूप जो सबको मानते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि सर्व प्रकार से उपासक वही हैं ॥ ७५ ॥

निजानन्द निज नेह अलौकिक कृपा साध्य अति गावें । सो पावै अनयास बास जो जीव हमेश सजावें ॥ रहे न लेश कलेश देश सुख सहज समाधि समावे। युगलानन्य सुधाम महा महिमा मेरे मन भावें ॥ ७६ ॥

परमानन्द एवं दिव्य अलौकिक प्रेम प्रभु कृपा से प्राप्त होता है। धाम बास से अनायास ही वह प्रेम प्राप्त होता है। दुःख का लेश नहीं रह जाता है। सहज समाधि होने लगती है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीधाम की महिमा मेरे मन में भाती है ॥ ७६ ॥

षट ऋतु बारहमास रास सुख चहुँ दिशि उमगत नीके । बैकुण्ठादि विभव सुख सर्वस

श्रीधाम में छहों ऋतुओं एवं बारहों महीनों में चारों ओर रस-रास उमड़ता रहता है। जहाँ पर वैकुण्ठ आदि धामों के वैभव फीके लगते हैं।

लागत तहँ अति फीके ॥ चलत नहीं चरचा चरित्र कछु केवल जस सिय पीके । युगलानन्यशरण भावत इह रहस सरस सुमती के ॥ ७७ ॥

जहां अन्य चरित्र कुछ नहीं होते, बस, केवल श्री-सीतारामजी की कमनीय कीर्ति होती रहती है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि जो बुद्धिमान रसिक होंगे उन्हीं को यह रस सुखकर होगा ॥ ७७ ॥

जहाँ तलक जग जाल ख्याल निज नजर मांझ दरसावे तहां तलक भय भेद खेदमय संत सुशास्त्र सुनावे । याते दृश्य ओर से चित मति करषि सुधाम समावें । युगलानन्य धाम अन्तर बसि दृश्य खोज नहिं पावे ॥ ७८ ॥

जहाँ तक जगत् का जाल का स्मरण होता है, वहां तक भय एवं दुख है। ऐसी संत शास्त्रों की आज्ञा है। अतः समस्त दृश्य प्रपंच से चित एवं बुद्धि को खींचकर श्रीधाम में लगानी चाहिए। श्री-महाराजजी कहते हैं कि धाम के बीच निवास करने से दृश्य आपही नष्ट हो जाता है ॥ ७८ ॥

सर्वोपरि श्रीधाम अवध अनवधि सुखसार सुधाकर। वसिये कटि कल कसि रसिये जो चाह चरित्र प्रभाकर ॥ मन मातंग कुसंग रग्यो तेहि जीतिय जलद जमाकर। युगलानन्यशरण धामहि बसि पाइये प्रेम सुधाकर ॥ ७६ ।

श्रीअवधधाम सर्वोपरि निरवधिक सुखसार सुधाकर हैं। यदि प्रभु चरित्र की चाह है तो कटि-बद्ध होकर यहां निवास कर ! मन रूप मतवाला हाथी कुसंग में रंग गया है। धाम बास से उस पर विजय प्राप्त करो। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्री-धाम बास से ही प्रेम सुधा प्राप्त होगी ॥ ७६ ॥

शारद शेष गनेश धाम महिमा कहते सकुचावे अपर अनेक मुनीस पार पावें नाही सचुपावे । मैं मतिमन्द द्वन्द दाब्यो दिल क्यों कछु वरनि बतावे। युगलानन्यशरण कोशलपुर ऊपर बलि बलि जावे ॥ ८० ॥

श्रीअवध धाम की महिमा का वर्णन करने में जब शारदा, शेष गणेश आदि भी सकुचाते हैं। अन्य मुनीशगण भी धाम महिमा का पार नहीं पाते हैं। तब मैं मतिमन्द द्वन्दों में फँसा हुआ किस प्रकार वर्णन कर सकता हूं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि हम तो श्रीकोशलपुरी के ऊपर बार २ बलि-हारी जाते हैं ॥ ८० ॥

लच्छ प्रकार भक्ति बरनहिं बिद बिमल विनोद विहारी। तामें सार सुधा रस पूरन नाम धाम भ्रमहारी ॥ दोऊ सुगम सकल सुख सौंपत योग अशोग अघारी। युगलानन्य उभय अंतर श्रीधाम अधिक अविकारी ॥ ८१ ॥

भक्तिरस रसिकों ने भक्ति के लाखों भेद वर्णन किए हैं। उनमें सुधारस से पूर्ण नाम और धाम ये दोनों सुगम हैं तथा सुखप्रद हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि इन दोनों में भी श्रीधाम अधिक सुलभ है ॥ ८१ ॥

नाम धाम दोऊ प्रधान सुचि सौगम कृपा प्रकाशी। पै श्रीधाम अधिक दयाल बिन यतन

नाम और धाम दोनों प्रधान हैं, सुलभ एवं कृपा प्रकाशक हैं किन्तु श्रीधाम अधिक कृपालु हैं। क्योंकि बिना यत्न के ही बिकारों को दूर करते हैं।

विकार विनाशी । नामी नाम निवास खास रस रास सुधाम बिभाशी । युगलानन्यशरण सेवत श्रीअवध न पुनि भव फाँसो । ८२ ॥

श्रीकोशला महा महिमा मन मति गति जान न आवे हैं । निज निज बुद्धि विलाश विष्णु बिधि शिव शेषादिक गावे हैं ।। सर्वोपरि श्रीधाम कृपासे परम मोद घन पावे हैं । युगलानन्यशरण अन्तर अनमोल छटा छबि छावे हैं ॥ ८३ ॥

वेदव्यास बरन्यो पुराण संहिता मांझ मुद मानी । सुजस सोहावन स्वच्छ सार श्रीअवध अकह अनुमानी । रहस गोप करि कह्यो प्रगट गुन गाथ स्वल्प महरानी । युगलानन्यशरण जेहि सुनि जग जोवन मति बौरानी । ८४ ।

अखिल अधाराधार अवध मुख सार बिलोचन हेरो । सावधान सब भाँति होय सब दिशि से निज दृग फेरो ।। समा अनूठी मिली भली अब जनि कीजे अवसेरो । युगलानन्यशरण सुधाम बसि तजि दे मेरो तेरो ।। ८५ ॥

धाम ध्यान धारिये धवल उर स्फुर जहान बिशारी । परमधरम मग मीत बिगत भवभीत पुरान पुकारी ।। पग पग परमानन्द प्रेम परि पूरन धाम मझारी । युगलानन्य थोरे हीं बासर बीते भेंट खरारी ।। ८६ ।।

धाम मांह उपवास रास सुख मात्र बिचारत प्यारे । अवध भीख सुरराज बिभवसे सहस गुनो

नाम एवं नामी तथा रसमय लीला का निवास श्रीधाम में ही है । श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीअवध धाम के सेवन से पुनः संसार में नहीं जाना पड़ता है ॥ ८२ ॥

श्रीकोशला की महामहिमा मन बुद्धि से समझ में नहीं आतीहै । ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं शेष आदि भी अपनी बुद्धि के अनुसार ही गाते हैं, श्रीधाम की कृपा से परमानन्द पाते हैं । श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीधाम के बीच अनुपम छवि की छटा छा रही है ॥ ८३ ॥

श्रीवेदव्यास ने संहिता एवं पुरानों में श्री-अवध की महिमा का वर्णन अकथ कहकर किया है । स्वल्प सुयश का वर्णन कर रहस्य भाग को गुप्त ही रक्खा है । श्रीमहाराजजी कहते हैं कि थोड़ी महिमा सुनकर ही संसारी जीव घबड़ाने लगता है ॥ ८४ ॥

सभी आधारों के आधार एवं सुखों के सार श्रीअवध धाम को समझना चाहिये । सावधान होकर सभी ओर से अपनी दृष्टि को फेर लेना चाहिये । यह अनुपम अवसर सौभाग्य से प्राप्त हुआ है । इस अवसर को हाथ से नहीं जाने दो । श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीअवध धाम में बस कर "मेरा-तेरा" छोड़ दो ॥ ८५ ॥

मिथ्या संसार को भूलकर चिन्मय धाम का ध्यान करना चाहिये । परम-धर्म का यही मार्ग है, पुराणों में ऐसा कहा है । श्रीधाम तो पग-पग पर परमानन्द से पूर्ण है । श्रीमहाराजजी कहते हैं कि धाम में थोड़े ही दिन बीतने पर खरारि श्रीरामजी मिलते हैं ॥ ८६ ॥

श्रीधाम में उपवास करके रहना भी परम सुख की राशि है । श्रीअवध में भीख माँगकर रहने में हजारों इन्द्र के बैभव से बढ़कर है । यहां का

...द धारे ॥ विषय विपुल वैराग्य भाग्य सम सकल तौर हितकारे। युगलानन्य धाम अन्तर विपरीति सुरीति सँवारे ॥ ८७ ॥

विषय भी वैराग्य भोग के समान सभी प्रकार हितकारी है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीधाम की विपरीति रीति भी सुरीति है ॥ ८७ ॥

अवध प्रभाव अगाध अलौकिक अवध कृपा करि जानें। साधन साधत पचें जन्म बहु तउ न लहे तिल ज्ञानें ॥ जेहि उर पुर सियराम रसिक नित बसहिं मरस मरमानें। युगलानन्य धाम महिमा मुद तेहि मानस झलकाने ॥८८॥

श्रीअवध का अलौकिक प्रभाव श्रीअवध की कृपा से जाना जाता है। अनेक जन्मों तक साधन करते २ पच मरे किन्तु तिल भर भी ज्ञान नहीं होता है। जिसके हृदय में रसिक शिरोमणि श्री-जानकी बल्लभ जू नित्य निवास करते हैं। श्रीमहा-राजजी कहते हैं कि उसी के समक्ष में श्रीधाम महिमा की झलक होगी ॥ ८८ ॥

अवध निवास पाय पै श्रीसुख सदन स्वाद नहिं पाते हैं। निकट सुधा सुरमनि सुरभी वर बोध बिना बिललाते हैं ॥ श्रीसतगुरु सम्बध सुचेतन पाय प्रतीति समाते हैं। युगलानन्य धाम महिमा मुद तेहि मानस झलकाते हैं ॥८९

श्रीअवध बास प्राप्त होने पर सद्गुरु के बिना भगवत्सुख स्वाद लोग नहीं पातेहैं। वे सुधा चिन्ता-मणि एवं कामधेनु के निकट रहने पर भी जाने बिना दरिद्र रहते हैं। जिनको श्रीसद्गुरु का सम्बंध प्राप्त है वही अवधरस पा सकते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीधाम महिमा उन्हीं के मानस में झलकती है ॥ ८९ ॥

ज्ञानाज्ञान मरम इतनो तन सहित रहित निरधारोगे। जीवन मुक्त विदेह रहस इत भली भांति अवधारोगे ॥ जे भीने रसरास रंग तिनकी गति विलग बिचारोगे । युगलानन्य शरण संसृति दुख शान्त नितांत निहारोगे ॥ ९० ॥

ज्ञान सुन्दर फल इतना ही है कि शरीर रहते हुए शरीरका भान न हो। इसी को जीवन मुक्ति तथा विदेह दशा कहते हैं। धाम बास से यह दशा अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जो युगल रास रंग में डूबे रहते हैं, उनकी गति कुछ विलक्षण ही होती है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि धाम बास से संसार का दुख निश्चित शांत हो जाता है ॥९०

बिपुल कलेश करत केवल पद कारन यती विवेकी। कोटिन में कोउ एक लहे गति गेह ज्ञान नित टेको। परम प्रमोद धाम पावे जन धाम बसत छल छेको। युगलानन्यशरण केवल सुख दरसत तहाँ अनेकी ॥ ९१ ॥

विवेकी सन्यासी कैवल्य मुक्ति के लिए बहुत परिश्रम करते हैं। उन करोड़ों में से कोई एक कठिनाई से कैवल्य मुक्ति पाता है। भगवद् जन धाम बास से परमानन्द पाते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि उस परमानन्द में अनेकों कैवल्य सुख दीखते हैं ॥ ९१ ॥

तिनसे धन्य नहीं दूजो कोउ तीनों लोक मझारी। जे श्री धाम निवास निरन्तर करें सचेत सम्भारी। सियवल्लभ गुन श्रवन मनन हरसायत रति रसवारो युगलानन्य शरण भीजे रस सुन्दर अवधबिहारी ॥ ६२ ॥

जो श्रीधाम में प्रीति सहित निरंतर बास करते हैं उनके समान बड़भागी तीनों लोकों में कोई नहीं है। श्रीधाम बासियों को श्रीसीतारामजी के गुण श्रवण मनन करने का निरंतर अवसर प्राप्त रहता है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीधाम बासी श्री-अवधविहारी के सौन्दर्य माधुर्य में निरंतर डूबे रहते हैं ॥ ६२ ॥

कोटिन ज्ञान ध्यान योगादिक अवध रेणु पर वारो। निशिदिन नेह लगाय भली विधि अपर उपाय निवारो॥ रशिक सजाती संग सजो नित नेह निशानी धारो। युगलानन्य धाम प्रभुता गहि वद्ध जीव निस्तारो ॥ ६३ ॥

करोड़ों ज्ञान, ध्यान योग आदि श्रीअवध की धूली पर न्यवछावर है। श्रीधाम बासियों को सजातीय रसिक संतों का संग अनुराग पूर्वक करना तथा अन्य उपायों को छोड़ देना चाहिये। श्रीमहाराज-जी कहते हैं कि धाम की प्रभुता धारण कर वद्धजीवों का उद्धार करना चाहिये ॥ ६३ ॥

किसही की मानो नाही सब भरम भावना बकते हैं। जिससे जीव बिमोचन सो सद्गुहम कहत सब सकते हैं ॥ नये नये मत विषम सुना कर शिष्य सहित पुनि छकते हैं। युगलानन्य सुनाम धाम गुन गान बिना नित झखते हैं ॥ ॥ ६४ ॥

सिद्धान्त विरुद्ध बातें किसी की नहीं माननी चाहिये, सभी लोग भ्रम पूर्ण बातें बकते रहते हैं। जिससे जीव भवबन्धन से मुक्त हो, ऐसी उपाय कहने में सभी सकुचाते हैं। नवीन-नवीन मतों को सुनाकर शिष्यों के साथ आनन्दित होते हैं। श्री-महाराजजी कहते हैं कि प्रत्येक प्राणी श्रीनाम एवं धाम के गुणगान केबिना नित्य दुखी रहतेहैं ॥६४॥

गुप्त प्रगट श्रीधाम मनोहर रहस लखैं जन भेदी। गमनागमन कलित कौतुक सुनि चकित होत चित खेदो ॥ श्रीसत्यापति परम पुरुष पररूप अनूप मपेदी। युगलानन्य शरण शिव श्रुति शुक जेहि सुख सक न उमेदी ॥ ६५ ॥

धाम का गुप्त प्रगट रहस्य भेदी लोग जान सकते हैं। प्रभु के नित्य विहार देखकर चित चकित हो जाता है। श्रीअवधपति पुरुषोत्तम श्री-रामचन्द्रजी का अनुपम रूप सदा प्रकाशित रहता है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीअवध सुख वेद, शिव, शुक आदि को भी दुर्लभ है ॥ ६५ ॥

परब्रह्म श्रीअवध एक रस राजत नित्य निहारो। श्री सरयू सुचि सगुन ब्रह्मवर बुद्धि विचित्र विचारो। जगन्नाथ सम सकल परम प्रिय पुरवासी अवधारो। युगलानन्य पुरान बचन वर सुनि गुनि दृढ़ उर धारो ॥ ६६ ॥

पुराणों में श्रीअवध को परब्रह्म एवं श्रीसरयूजी को सगुण ब्रह्म कहा गया है। अयोध्यावासी सभी श्रीजगन्नाथजी के विग्रह है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि इन बचनों का मनन करना चाहिए ॥ ६६ ॥

सातो पुरी बीच गनना श्रीसरस कोशला कीनी है। तामें तिलहूं मात्र न क्षति कछु पुरिन बड़ाई दीनो है॥ भूप-भूप अन्तर विभेद दुति समझे सुमति सुझीनीं है । युगलानन्य शरण सर्वोपरि श्री सत्या रस भीनी है॥ ६७॥

सातों पुरियों के भीतर श्रीअवध की गणना की गयी है, इसमें कोई क्षति नहीं है, क्योंकि इससे तो सभीपुरियों की बड़ाई की गई है। शक्ति अनुरूप परस्पर भूपों में अन्तर होता है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीअवधधाम सर्वोपर रसपूर्ण हैं॥६७॥

सकल ईश कारन सियवर तिमि धाम धामपति मानो। राम नाम सब नाम कन्द सच्चिदानन्द जिय जानो॥ ऐसे ही शिरताज सुगुन श्री भक्त भूप पहिचानो। युगलानन्य शरण सब तजि रहु धाम माँझ उरझानो॥ ६८॥

जिस प्रकार समस्त अवतारों के कारण श्रीसीतारामजी हैं, उसी प्रकार सभी धामों के कारण श्रीअवध है। जैसे श्रीरामनाम समस्त भगवत नामों में श्रेष्ठ सच्चिदानन्दमय है, वैसे ही श्रीराघवेन्द्र के उपासक भी सभी भक्तों में श्रेष्ठ हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि सभी आशाओं को छोड़कर श्री धाम में आसक्त हो जाओ॥ ६८॥

धाम निवास किये बन्धन भवमोचन जौन न माने। कठिन कलपना करि कषाय मन नर्क तर्क हठ ठाने। तिनकी संगति किये प्रति परतीत प्रकाश पयाने। युगलानन्य शरण सुधाम मधि मुक्ति अनंत विधाने॥ ६९॥

श्रीधाम में निवास करने पर भी संसार की निवृत्ति जो नहीं मानता तथा कठिन कुतर्क द्वारा हठ करता है उसकी संगति से प्रीति प्रतीति का विनाश हो जाता है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीधाम में तो मुक्ति के अनेकों विधान हैं॥ ६९॥

तीरथ अमित चहूंदिशि सेवत श्रीकामदगिरि स्वामी। सातों पुरी सदैव एक रस वदत साँच अनुगामी॥ अवध प्रमोद सघन सुन्दर बन बिलसत रहस सदामी। युगलानन्य शरण तिनके नित निकट वास सुख धामी। १००॥

चारों ओर से अनेकों तीर्थ सेवा करते रहते हैं। श्रीकामदगिरि भी एक ओर विराजमान हैं। प्रमोदबन में श्रीप्रभु का एक रस विलास होता रहता है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि इनके निकट निवास परम सुख प्रद है॥ १००॥

नाना रतन रचित मंगलमय मणिन खचित छविछाजी। बाग बहारदार फूले छवि रूप बसंत विराजी। लहर उतंग मधुर मन्दाकिनि महामोद सुख साजी। युगलानन्य शरण संतत तिनके समीप दिल राजी॥ १०१॥

नानारंग के मंगलमय मणियों के अनेकों महल प्रकाशित हैं। नित्य बसन्त की शोभा विराजमान हैं। मधुर मन्दाकिनी की लहरें मोद उपजाती हैं। श्रीमहाराज जी कहते हैं कि जिनके समीप में विभूतियां विराजमान हैं वह कामदगिरि भी इनकी सेवा में लगे हैं॥ १०१॥

श्रीसीतापति अंश लेश पद बाम सुनख पय परसे। देव धुनी महिमा अपार सब भाँति

श्रीसीतापति राघवेन्द्र के अंशभूत श्रीहरि के बाम पाद प्रक्षालन से श्रीगंगाजी प्रकट हुई, जिनकी वेद-शास्त्रों में अपार महिमा है। श्रीमन्दाकिनी के

ग्रन्थ मधि सरसे ॥ श्री मंदाकिनि नीर शतत सिय श्याम निमज्जत हरसें। युगलानन्यशरण कहिये किमि प्रबल प्रभाव विमरसे ॥ १०२ ॥

जल में स्नान करते हुए श्रीरामचन्द्रजी सदा प्रसन्न होते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि इस महान प्रभावों का किस प्रकार विमर्श किया जाय ॥१०२॥

श्रीसरयू सुन्दरी मधुर मंदाकिनि अकथ अगाधा। दरश परश मज्जन कीने प्रभु मिलत न एको बाधा ॥ द्विज पतनी गंधर्व तिया तिमि गीध सुगनिका बाधा। युगलानन्य शरण छूट्यो भव व्याध अनेक असाधा ॥ पंच प्रेत पाखण्ड पगे दुख दोष निकेत गनाये। दरशत अवध परम पावन पररूप धाम थिरपाये ॥ रज कन लगे भगे यम गन घन पातक पुंज जलाये। युगलानन्य शरण महिमा सुनि मोद महान बढ़ाये ॥ १०३-१०४ ॥

श्रीसरयू एवं सुन्दर मन्दाकिनी का प्रभाव अकथ अगाध है। जिनके दर्शन स्पर्श करने से प्रभु के मिलन में कोई बाधा नहीं होती। अहिल्या, गंधर्वी, गीध, गणिका आदि अनेकों पापी गण भवबाधा से मुक्त हुए ॥ १०३ ॥

पाँच प्रेत दुःख दोष के घर थे। किन्तु श्रीअवध का दर्शन पाकर नित्य प्रभु की सेवा प्राप्त कर गये। श्री अवध की धूलि लगते ही पाप तथा यमदूत भाग गये। श्री महाराज जी कहते हैं कि ऐसी महिमा देखकर उन्हें अधिक आनन्द हुआ ॥ १०४ ॥

पश्चिम परम पुनीत प्राण प्रिय कलित कामता सोहै। पूरब श्री हनुमंत अभय प्रद सन्मुख सुमुख सुजो हैं ॥ दक्षिण फटिक शिला सुन्दरतर पद पंकज जुत मोहैं। उत्तर दिशि प्रमोदबन थलवर युगलअनन्य लसो हैं ॥१०५॥

अब पुनः चित्रकूट का वर्णन करते हैं:—
पश्चिम में परम प्राण प्रिय श्री कामदगिरि सुशोभित है, पूरब में श्री हनुमान धारा का अभय प्रद दर्शन है। दक्षिण में फटिक शिला श्री प्रभु के चरण चिह्नों से युक्त विराजमान हैं। उत्तर दिशा में प्रमोद बन की शोभा अनुपम है ॥ १०५ ॥

चारों तरफ अनूप रंग रस मध्य कुण्ड सिय प्यारी। बिमल बिहार विभव दरशत जहँ रसिक जनन हितकारी। तिनके निकट निवास खाश सजि सरस्यो सुख धनुधारी। युगलानन्य महा मंगलमय फूली फबि फुलवारी ॥ १०६ ॥

रसिकजनोंके परमप्रिय श्रीजानकीकुण्ड पर अनेकों बिहार का दर्शन होता है। चारों ओर मंगलमय बाटिका सुशोभित है। श्री महाराज जी कहते हैं कि श्री जानकीकुण्ड पर निवास करने से हमें श्रीसीताराम जी के अलौकिक सुख का साक्षात्कार हुआ है ॥ १०६ ॥

मिथिला महा मोद मंगल मति मानस मंजु मराली। युगल ललित लालन लीला मनि मुक्ता असन रसाली ॥ सहज स्वच्छ सौंदर्य सार सुचि वर विवेक प्रतिपाली। युगलानन्य अनूठी भू पर राजत रहस निराली ॥ १०७ ॥

श्रीअवध के पूरब श्रीमिथिला धाम सुशोभित हैं। युगल लीला का प्रकाशक एक बार शरण जाने पर ही संसार को पार कर नित्य धाम का अधिकारी बन जाता है। श्री अवध से भिन्न युगल

सकृत शरण संसृति सरि तारनि नित्य धाम मुद देनी। अवध अभेद रहस परकाशिनि युगल सनेह निशैनी ॥ ललि सुपद पंकजप्रिय भूषित छबि रस भरी सुनैनी। युगलअनन्यअली को दीजे अवधबास पिक बैनी ॥ १०८ ॥

स्नेह प्रदायक है। श्रीजनकनन्दिनी के चरण कमल से विभूषित छबि रस से भरी है। हे पिकवयनी ! युगलअनन्यअलीको अवध बास दीजिये ॥१०७-१०८

श्री कमला विमला ममला मति ममनो रमनी प्यारी। श्री स्वामिनी सनेह सुधा रस भरी हरित छबि धारी॥ महिमा विदित प्रतच्छ तिहूं-पुर रसिकन सुख प्रद भारी। युगलअनन्यशरण मिथिलापुर विलस रहो श्रमहारी ॥ १०९ ॥

कमला, विमला आदि सरिताएँ पाप को हरने वाली हैं। श्रीजनकनन्दिनी के स्नेह सुधारस से भरी हुई हरित छवि धारण किए हुए हैं। तीनों लोकों में मिथिला की महिमा प्रकट है। श्रीमहा-राजजी कहते हैं कि रसिकों के आनन्ददायक श्री-मिथिलाधाम सुशोभित हैं ॥ १०९ ॥

श्री कोशलपुर चित्रकूट श्री मिथिला एक सही है। इनमें भेद न वेद वदत सत सुमतहुं बीच नहीं है ॥ तीनों थल मधि जहाँ सुरुचि तहँ बसिये मोद मही है। युगलानन्यशरण तीनों सुचि समता सुमति गही है ॥ ११० ॥

श्रीअवध, चित्रकूट एवं मिथिला तीनों एक तत्व हैं। वेद-शास्त्र इनमें भेद नहीं मानते। तीनों स्थलों में जहां भी रुचि हो वहां निवास कीजिए। फिर तो आनन्द ही आनन्द है ॥ ११० ॥

श्री सत्या युग रूप अमल अनुरागी जन निज जाने। अंगी अंग कहत अनुचित रस बिलग भये सुख हाने॥ मिथिला अवध बिशेष सुभग सम्बन्ध हेतु अभिधाने। युगलानन्य सुधाम नेह बिन मूरख नर हैराने ॥ १११ ॥

श्रीअवध के दो रूप हैं, अनुरागी जन जानते हैं। यदि दोनों को अंग-अंगी कहा जाय तो रस की हानि एवं अनुचित होगा। श्रीमिथिला तथा श्रीअवध का दो रूप सम्बन्ध रस की पुष्टि के लिए है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि धाम प्रेम के बिना मूर्ख लोग व्यर्थ ही परेशान रहते हैं ॥ १११ ॥

श्रीकोशलपुर परम रहस रस वेद लोक से न्यारो। सुनो श्रवन मन लाय विलच्छन परम प्रमोद सुधारो ॥ विधि विरचित प्रपंच पानिप तहँ रंचक दृग न निहारो। युगलानन्यशरण अति अद्भुत अनुपम चरित विचारो ॥ ११२ ॥

श्रीकोशलपुरी का परम रहस्य लोक वेद से न्यारा है। प्रेम के साथ धाम रहस्य का श्रवण करना चाहिये। ब्रह्माके प्रपञ्च का तनिक भी सम्पर्क नहीं है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीअवध का चरित अनुपम है ॥ ११२ ॥

दंड अदंड अखंड यतिन करकंज सुमंजु बिराजे। भेद अखेद सपेद मोद प्रद कलित कवित मधि भ्राजे ॥ दाम मधुर गर बीच व्योम

'दण्ड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज' की भांति अब श्रीअवध का वर्णन करते हैं--श्री-अवध में दण्ड यतियों के करकमलों में प्राप्त रहता

अन्तर अभूत छबि छाजे। युगलानन्यशरण सुन्दर सुचि साम अन्त दिन राजे ॥ ११३॥

है, भेद कवितात्रों में रहता है, दाम गले के बीच में एवं लोभ में तथा साम दिन के अन्त में होता है ॥ ११३ ॥

चोरी चित्त वित्त मोहन मन रूप अनूप करे हैं कुटिल केश वर वेश सोहावन रंग रस सरस भरे हैं। चपल चमक दृग द्रुत तुरंगगति अपर अलोल खरे हैं। युगलानन्य शरण प्रमोद-वन रीत सुमनिन जरे हैं ॥ ११४ ॥

चोरी--श्रीराघवेन्द्र प्रेमियों के चित्तकी चोरी किया करते हैं। कुटिलता केवल प्रभु के केशों में है। चपलता नेत्रों में एवं घोड़ों की चाल में है, और लोग सभी स्थिर हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीप्रमोदबन की रीति सभी अनोखी है ॥११४॥

नीच नीर कल कूप भूमि सुचि सुजन नहीं नर नारी। विषम तीन शिव नैन तथा गुन अलग समत्व सुधारी ॥ वाद विवाद तर्क ग्रन्थन मधि अनत स्वाद अविकारी। युगलानन्यशरण संगर सुचि प्रीति मांझ सुखकारी ॥ ११५ ॥

नीच केवल कूप का जल है, विषमता केवल शिवजी के तीन नेत्र एवं त्रिगुणमें है। वाद-विवाद केवल तर्क ग्रन्थों में रहते हैं ॥ ११५ ॥

दान मान प्रभु भजन पठन मधि जहँ न नेक मरजादा। और ठौर मर्याद यथारथ परमारथ अहलादा ॥ शंकर बरन चित्र अन्तर रंग नाना भांति प्रमादा। युगलानन्यशरण श्रीकोशलपुर नहि कतहुँ प्रमादा ॥ ११६ ॥

दान मान प्रभु भजन पाठ में, शंकर वर्ण केवल चित्रों में एवं विविध महलों में रहते हैं। कंप केवल पताका एवं वस्त्रों में है। व्यभिचारी भाव साहित्यिक ग्रन्थों में रहता है ॥ ११६ ॥

कंप पताक सुपट दलमधि नहि अनत रंचहूं दरसे पोथिन बीच भाव विभिचारी अपर सुथल नहि परसे। मद युत प्रबल मतंग रंग रस जंग सुमन दृग करसे युगलानन्यशरण सत्या मधि अति अनूप सुख सरसे ॥ ११७॥

शूल हूलतिय प्रसव कूल अनुकूल अनत चहुँधाहीं। नाम दीप अन्तर सनेह मानव मधि छुवत न छांहीं बनज बीच द्विजराज वैर थल अपर प्रमोद सदाहीं। युगलानन्य वियोग सपन मधि अनत सुयोग समाहीं ॥ ११८॥

अंग भंग जहँ यक अनंग सब सुन्दर विरुज शरीरा। युद्ध क्रुद्ध बहु जीव कौतुकी प्रभु समीप

मद से युक्त केवल हाथी है। शूल केवल त्रियों के प्रसव में है। स्नेह का नाश मानवों में नहीं होता किन्तु दीपक के स्नेह (तेल) का नाश होता है। वैर केवल चन्द्रमा के साथ कमल का है, नहीं तो सर्वत्र ही परम प्रमोद है। वियोग केवल स्वप्न में है अन्यत्र संयोग ही संयोग है। अंग-भंग केवल एक अनंग-कामदेव ही है, और सभी अवध वासी विरुज-शरीर युक्त हैं। श्रीअवध के योद्धा केवल युद्ध में ही क्रुद्ध होते हैं अन्यत्र प्रभु के समीप गम्भीर बने रहते हैं। (कंटक) के साथ केवल कोई कोई वृक्ष हैं, शेष सभी अकंटक धीर हैं। सुन्दर पुतली चित्र चातुरी रहित है, शेष सभी बुद्धि राशि हैं। केवल स्वर्ण अग्नि में शुद्ध किया जाता

गम्भीरा। कंटक सहित जहाँ विटपी कोउ अपर अकंटक धोरा। युगलानन्यशरण सियवर-पुर चरित सुगुन नग हीरा॥ ११९॥

चारु चित्र पूतरीं चातुरी रहित अपर बुधि राशी। अनल शुद्ध निज हेम करत सब स्वतः शुद्ध प्रतिकाशी॥ नीन्द मांह मुद मोह भाम नित विगत मोह पुरवासी। युगलानन्य सुलाल सुजस को लोभ ललित लय खाशी। १२०।

चाप मांह गुन छेद छोभ भूरुह सुबात संयोगन में। काम व्यथा निशि चक्रवाक नहिं अपर दुखी भव भोगन में॥ सूची भेद सुहेम नगन तहँ और उमंग अशोगन में। युगलानन्य-शरण धामहि बसु काम न फिरि भवरोगनमें॥ १२१॥

दंभी वक जेहि ठौर देखिअत मत्सर धर्म निवाहन में। अनमित अहंकार भीनो तहँ बेनु एक दुख दाहन में। लाज रहित विज्ञान निरत तहँ परमहंस उत्साहन में। युगलानन्य शरण सियवरपुर कीजे नेह निबाहन में॥ १२२॥

ऐसेहि अमित भांति गुनिये गुन प्राकृत परस न शाके। अग जग जुगल रूप रस में ठग रहे न कोउ मग ताकें। चाह दाहभय मिटी लोक सब छैल छटा छवि छाकें। युगलानन्यशरण धामहिं तजि अनत खेह खर फांके। १२३।

चिंतामनि कौस्तुभ पारसमनि इन्द्र नील मय भूमी। चहूं ओर बहु भांति मनिन यत जग-मगाति घन घूमी॥ सौंध स्वच्छ बर व्योम छुवत जनु चन्द बदन त्रप चूमी। युगलानन्य धाम दरशन बिन तिय ज्यों रुई तूमी। १२४॥

है शेष सभी स्वतः शुद्ध हैं। निद्रा में केवल मोह प्रतीत होता है और सभी पुरबासी मोह रहित है। लोभ केवल श्री सीताराम जी के चरितामृत में सबको है। ११७ से ११९ तक

चाप में गुण (डोरी) के लिये छिद्र है। वायु लगने से केवल बृक्षों में छोभ होता है काम की व्यथा केवल रात्रि में चकवा चकई को होता है, स्वर्ण के भूषणों में नग जोड़ते समय केवल सूची भेद होता है। दंभी केवल वक है। मात्सर्य केवल धर्म के निभाने में है। लज्जा रहित केवल परम-हंसगण हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि उसी प्रकार अनेक प्राकृतगुण नाम मात्र के लिए जीवित हैं, किसी को स्पर्श नहीं कर पाते। यहां जड़-चेतन सभी श्रीयुगल रूप में ठग रहे हैं। अन्यत्र दृष्टि डालने का अवकाश कहां? सभी की तृष्णा मिट चुकी है बस सभी धामवासी युगलछवि में छके रहते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीधाम छोड़कर अन्यत्र धूल फांकना व्यर्थ है।

श्रीअवध की भूमि चिन्तामणि कौस्तुभमणि एवं पारसमणिमय है। चारों ओर मणिमय अनेक अनेक उच्च अट्टालिकायें हैं। श्रीसरयूतट में मणि-मय घाट बने हैं। अनेक प्रकार के पक्षीगण मधुर कलरव करते रहते हैं। अनेक प्रकार के पुष्पों पर

श्रीसरयूतट घाट हेम मनि जड़ित जगमगी जोती। जहाँ त्रिविध वर वरन विहंग बिहरहिं विहार छवि होती। फूले कलित कंज मंजुल मतवारे मधुप सुगोतीं। युगलानन्य सनेह धाम मानहु मानिप मने मोती॥ १२५॥

चिंतामनिमय मही मधुर मन मोहनि कहुं बिराजी है। अरुन रतन रसभरी कहूँ शित श्याम महामनि राजी है। सुरपति मनिन रचित कतहूं हिय हरनि सुछबि तर ताजी है युगलानन्य छटा छिति लखि रति रमा माननी लाजी है॥ १२६॥

अमित रंग अनमोल महामनि सजित सौंध दुति दानी। युगल तीन पुनि चार पांच षट सप्त आठ अनुमानी। नव दश एकादश द्वादश लौं स्वच्छ उच्चता छानी। युगलानन्यशरण जेहि जोहत श्रुति सारदा दिवानी। १२७॥

कलित कांति कमनीय कंगूरन मध्य मनोहर ताई। जाल झरोखन बीच बिलच्छन रचना नवल निकाई॥ गोपुर चारु कपाट महामनि खचित सुछवि छलकाई युगलानन्यशरण तोरन मनु मदन फंद दुति दाई॥ १२८॥

मदन सदन प्रति प्रेम प्रभा मद सभा सलोनी सोहीं। सियबल्लभ गुन कथन मगन मति मानस सुमुनि विमोहीं॥ भीने भाव चाव चरचा विच बिथकहि विमल बटोही युगलानन्य धाम सुषमा सुख अहोभाग जेहि जोही॥ १२९॥

मधुप गुंजार करते रहते हैं। कहीं चिन्तामणिमय भूमि है कहीं पद्मरागमणिमय, कहीं नीलमणिमय है. भूमि की छटा देखकर रमा रति लज्जित होती हैं॥ १२० से १२६ तक॥

अनेक रंग के अमूल्य मणियों से रचित भवन हैं, कोई दो खण्ड, कोई तीन-चार पांच-छे-सात आठ-नव-दश-एकादश एवं द्वादश खण्डों के स्वच्छ उच्चतर भवन हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि जिसकी शोभा देखते ही श्रुति एवं शारदा पागल हो जाती हैं॥ १२७॥

सुन्दर कंगूरों के मध्य अलौकिक कान्ति है। बीच २ में झरोखा जाल की रचना विलक्षण है। गोपुर (बाहर द्वार) में मणिजटित किवाड़ शोभित है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि चारों ओर वन्दनवार की शोभा मनको हर लेती है॥ १२८॥

अर्थः- सदन-सदन प्रति सुन्दर अलौकिक प्रभा शोभा पा रही है। श्रीजानकीबल्लभजी के गुणों के कथन में मुनिओं के मन आसक्त हैं। भाव पूर्ण रसमय चर्चाओं को सुनकर पथिकगण भी कुछ बिलम्ब तक ठहर जाते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि जिनका भाग्य बड़ा है वही धाम की शोभा देखते हैं॥ १२९॥

अति अनूप चहुं ओर कोट कमनीय किता कुछ न्यारी। नवल रतन नव रचित चारु चित हेरत हिय सुखकारी॥ सुन्दर शहर मध्य राजत बहु भांति बजार तयारी। युगलानन्य कोट हर चारो तरफ सुभट रखवारी॥ १३०॥

श्री श्री महाराज मंदिर अति अनुपम लखि हिय हरषे। तैसे ही सुनिवास खास छबि सुधा बुन्द वर बरषे। श्री श्री सहम समेत सोहावन कनक महल मन करषे। युगलानन्य अनंत महल हिय ध्यावत रहत न तरषे॥ १३१॥

नाना रंग विहंग विमल कल कूजहिं नटहिं नवीने। सुनि सुनि मोद उदय उर अन्तर होत विशेष प्रवीने। ललित विटप सुचि साख साख अनुराग राग रंगीने युगलानन्यशरण सुधाम रुचि बाढ़त ज्यों जल मीने १३२॥

फूली लता ललित लोनित नित मधुर मधुप गुंजारे। बसत विचित्र चारु रचना रचि जित रितुराज बहारे। केलि कदंब कुंज कुंजन प्रति हास हुलास हजारे युगलानन्य धाम मुद मंगल ऊपर सब सुख वारे। १३३॥

वापी कूप तड़ाग सरोवर प्रेम पियूषन पूरन हैं। शीकर पियत पियास त्रास तम ताप हरत ततूरन हैं कीट पतंग सुरंग सभी लघु दीरघ विगत विसूरन हैं। युगलानन्यशरण मेरो श्री धाम सजीवन मूरन हैं॥ १३४॥

रे चित मति मन मोह लोभ अभिमान दान दुत दीजे। सकल दिशिन से सिमिटि सदा श्री

नवीन नवरत्नों से जटित चारों ओर कोट की कमनीयता अनुपम है, जिसके दर्शन से ही हृदय हर जाता है। नगर के मध्य में सजावटों से पूर्ण बाजार की बनावट अनेक भांति की है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि कोट के चारों ओर चतुर सुभट रक्षा में सावधान हैं॥ १३०॥

श्रीचक्रवर्तीजी का मन्दिर देखकर हृदय में महान् हर्ष होता है तथा कौशल्या आदि माताओं के महलों में भी शोभा की बर्षा होती है। अनन्त श्री सम्पन्न श्रीकनक भवन के साथ अनन्त कुञ्ज-निकुञ्जों का ध्यान करने से सारी कामनायें पूर्ण हो जाती हैं॥ १३१॥

अनेक प्रकार के पक्षीगण मनोहर बृक्षों की शाखाओं पर अनुराग रंग से रंगे हुए मधुर कलरव के साथ नवीन नृत्य करते रहते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि जैसे जल से मीन की भांति धाम में मेरी रुचि बढ़ती है॥ १३२॥

ललिल लतायें विकसितहैं, उन पर मधुप गुञ्जार कर रहे हैं। विचित्र रचना के साथ ऋतुराज बसंत जहां सदा निवास करता है। कुञ्ज कुञ्ज प्रति युगल-विहार एवं अनन्त हास विलास होते रहते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीधाम के मंगलमय आनन्द पर समस्त सुख न्यवछावर हैं॥ १३३॥

वापी कूप तड़ाग आदि प्रेमामृत से पूर्ण हैं। इनके एक बुन्द मात्र पान करने से पाप-ताप दूर हो जाते हैं। छोटे बड़े कीट पतंग सभी चिन्ता रहित हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीअवधधाम मेरी सजीवन मूरि है॥ १३४॥

अरे मन! मोह-लोभ-अभिमान को छोड़कर सभी दिशाओं से सिमिट कर श्रीधाम में सुदृढ़ रुचि कीजिये। जो भी कुछ उचित-अनुचित करने की

धाम सुदृढ़ रुचि कीजे ॥ जो कछु अनुचितानुचित रुचे सो इतही करि जस लीजे। युगलानन्य शरण श्रीसरयू सुधा स्वाद पय पीजे ॥ १३५ ॥

रुचि हो उसको यहीं करके यश प्राप्त करो। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि श्रीसरयूजी का सुधासम जल-पान करो ॥ १३५ ॥

श्री सत्या सुविनोद छनहिं छन अधिक अधिक क्या कहिये। उर अन्तर उमगाथ महामुद समुझि बूझि चुप रहिये। जौन सुथल वर वास किये पल एक न पुनि दुख सहिये। युगलानन्य शरण दृढ़ मत शत शीष धामगति गहिये॥ १३६ ॥

क्षण-क्षण में बढ़ने वाला श्रीअवध का विनोद क्या कहें, बस, हृदय के भीतर ही अनुभव करके चुप रहना चाहिये। जिस स्थल में एक पलके निवास से दुख समाप्त हो जाता है। श्रीमहाराज जी कहते हैं कि दृढ़मन करके धाम का आश्रय लेना चाहिये ॥ १३६ ॥

योग ज्ञान वैराग्य साधना रहित परम पद पैये। कौने काज कलेश देश बसिके छानी छल छैये ॥ अवध विमल विथीं बजार बन विहरत विरह बढ़ैये। युगलानन्यशरण सम्पति की चितवनि चाह न चहिये ॥ १३७ ॥

योग, ज्ञान, वैराग्य आदि साधन के बिना ही धाम वास से परमपद प्राप्त होता है। फिर अन्य देशवास का कलेश सहने की क्या आवश्यकता। श्रीअवध के निर्मल गली बाजार-बन आदि में घूम-घूम कर विरह बढ़ाना चाहिए। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि अन्य सम्पत्ति की चाह नहीं करनी चाहिये ॥ १३७ ॥

बारह मास प्रकाश रास रस उत्सव विविध बहारें। वरषगांठ वर बजत बधाई लली लाल प्रति द्वारे। श्रीसरयू सुचि जन्म दशहरा दान अमित वित वारें। युगलानन्य सुरथ झांकी करि सुधि बुधि होश न धारें ॥ १३८ ॥

श्रीअवध में बारह महीने रास-रस का प्रकाश एवं विविध उत्सवों का आनन्द रहता है। चैत्र वैसाखमें श्रीरामनवमी एवं श्रीजानकीनवमी के अवसर पर प्रत्येक मन्दिरों में लली-लाल की बधाई बजती है। ज्येष्ठ में श्रीसरयूजी के जन्म पर दशहरा के समीप अमित धन वारे जाते हैं। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि अषाढ़ में रथयात्रा की झाँकी करके तन-मन भूल जाता हैं ॥ १३८॥

सखियन मन भावन झूला अनुराग अलीगन धारें। भादो भाव समेत नाव कलिकेलि विचित्र बहारें। रास उजास दीपमाला वर व्याह उछाह विहारें। युगलानन्यशरण नानाविधि दान लेत द्विज हारें ॥ १३९ ॥

श्रावण में झूलन महोत्सव सखीगण उत्साह के साथ मनाती हैं। भादों में जल-विहार नाव-क्रीड़ा होती है, आश्विन में रास महोत्सव कार्तिक में दीपमालिका, अग्रहन में श्रीसीताराम विवाह, पौस की संक्रान्ति में विविध दान, माघ में बसन्तोत्सव पर सखीगण बसन्त बधाई गाती हैं, फाल्गुन में

विमल वसंत राग गावें वर बाम वसंत बधावें। मधुर मंजरी प्रिय पल्लव लखि आनन्द मन न समावें ॥ फाग अमल अनुराग अलौकिक पिचकन धूम मचावें। युगलानन्य शरण सब रितु रस रहस अवध अधिकावें ॥ १४० ॥

अमल अनुराग के साथ होली महोत्सव में रंग रस की वर्षा होती है, श्रीमहाराजजी कहते हैं कि इस प्रकार बारहो मास श्रीअवध में आनन्द मंगल होता रहता है, 'नित नव मंगल कोशलपुरी' ॥१३९-१४०॥

खान पान मनमान चाह चित ते सब भांति उतारो श्री सुख सदन अवध अन्तर वर बाम सुदृढ़ निरधारो रैन ऐन सिय श्याम सुजस कहि परम प्रेम पद प्यारो। पारो युगलानन्य शरण इत उत मत व्यथा निहारो ॥ १४१ ॥

खान-पान-सम्मान की इच्छा को चित्त से हटा दो, सुख सदन श्रीअवध में दृढ़वास का निश्चय करो। रात दिन श्रीसीतारामजी के सुयश वर्णन कर परमपद प्राप्त करो। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि इधर-उधर नहीं निहारो ॥ १४१ ॥

पुरबासिन सन सहस भांति सम्बन्ध सजावो मांचो। है याही मधि मोद परम सपने नाहीं कहुँ राचो। चौदह लोक शोक संयुत सब अधिक अविद्या आंचो युगलानन्यशरण मति युत तज-बीजो कंचन कांचो ॥ १४२ ॥

श्रीअवध बासियों से हजारों भांति सच्चे सम्बन्ध सजाओ, इसी में आनन्द है। चौदहों लोक शोक युक्त है एवं अविद्या ग्रस्त है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि बुद्धि पूर्वक कञ्चन और कांच को पहिचानो ॥ १४२ ॥

तन धन धाम वृथा सबही श्रीअवध सनेह सचाई है। विमल सुहगन विलोकि भली विधि पुनि करु अनत कमाई है ॥ श्रुति सिद्धांत शिरोमनि सुचि मत संवत तोहि सिखाई है। युगलानन्यशरण समुझत सब भांति विशेष भलाई है। ॥ १४३ ॥

तन-धन-धाम सब व्यर्थ है, श्रीअवध का स्नेह सच्चा है, निर्मल नेत्रों से देखो। वेद-शास्त्रों का सत्य सिद्धान्त मैंने बताया है। समझने से विशेष लाभ होगा ॥ १४३ ॥

तामे नित प्रति रमो सुपन सजि तबहीं विशद बड़ाई है। जेहि जोहत हित अमित जतन सो सहज मिले रघुराई है इसी वास्ते उचित निरंतर धाम निवास सगाई है। युगलानन्य फाड़ दफ्तर जम पाई सरस सफाई है ॥ १४४ ॥

जिनके दर्शनों के लिये अमित प्रयास किया जा रहा है वे रघुनन्दन सहज में मिलते हैं। उनमें नितप्रति दृढ़ता पूर्वक रमण करो, इसी में बड़ाई है। इसलिये धाम बास का सम्बन्ध उचित है। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि यमराज का दफ्तर फाड़कर सरस सफाई प्राप्त करो। अथवा यमराज धाम बासियों का दफ्तर स्वयं फाड़कर सफाई देते हैं ॥१४४

कहा करे विधि श्रंक बंक बंचक प्रपंच पटु-ताई को। गहा अशंक टेक प्रीतमपुर रहा न डर दुचिताई को ॥ बहा सुमन सरयू तरंग लहरों में सचि सुचिताई को। युगलानन्यशरण हरगिज नहिं जोहों जान जुदाई को ॥ १४५ ॥

जब प्रियतम की पुरी का आश्रय ले लिया तब ब्रह्मा की टेढ़ी लेखनी क्या करेगी, तथा बंचक प्रपंच क्या करेगा। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि जब श्रीसरयूजी की लहर तरङ्गों में मन बह गया तब अन्यत्र फँसने का अवसर ही कहाँ ॥ १४५ ॥

बालेपन की प्रीति कहो क्यों छूटे प्रियपुर प्यारे से। जाने मरम नहीं कोई पर छिप्यो न राज दुलारे से। अपनी दासी समुझि मुझे अनयास खींच लइ धारे से युगलानन्यशरण तिल भर नहिं काज रहा भव भारे से। १४६ ।

श्रीप्रियतम के धाम से मेरी प्रीति बाल्यावस्था की है, वह कैसे छूट सकती है। इसका मर्म कोई नहीं जान पाया, किन्तु श्रीराजकुमार से यह बात नहीं छिप सकी। अपनी दासी समझकर मुझको भव प्रवाह से खींच लिया। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि अब संसार के झंझटों से तिलभर भी जरूरत नहीं है ॥ १४६ ॥

क्या कुदरत कोमत मेरी जो कहों सिफत वदबानी से। महिमा अगम अमूल शूल से रहित सहित सुख खानी से। चाहों बार बार छनछन सरयूतट रुचि रजधानी सें। युगलानन्य शरण आशा पूजें सरयू महरानी सें ॥ १४७ ।

श्रीअवध की अपार महिमा कहने की शक्ति मेरी वाणी में नहीं है। मैं बार-बार यही चाहता हूं कि मेरी रुचि श्रीअवध सरयूतट में हो। यह आशा श्रीसरयू महारानी पूरी करेंगी ॥ १४७ ॥

भुक्ति मुक्ति अभिलाख नहीं उत्साह यही मन मेरे है। श्रीसाकेत सरस सरयू तट तीर निवास निवेरे है ॥ सिय वल्लभ गुननाम गाय हरमावत हिये उजेरे हैं युगलानन्यशरण दृग दिल से भलो भाँति इह हेरे हैं। १४८ ।

भुक्ति-मुक्ति की अभिलाषा मेरे मन में नहीं है, बस एकमात्र यही उत्साह है कि श्रीअवध सरयूतट मेरा सदा निवास हो, तथा श्रीसीतारामजी के गुणों को सदा गान किया करूँ। श्रीमहाराजजी कहते हैं कि मैंने भीतर के नेत्रों से देखकर ऐसा निश्चय किया है ॥ १४८ ॥

❀ दोहा ❀

धामकांति अभिराम अति, अभय करतजनजान।
युगलानन्य सनेह सजि सुनत कलित कल्यान ।।

श्रीअवध कांति अत्यन्त सुन्दर आश्रित जनों को अभय करने वाला है। प्रेम पूर्वक श्रवण करने से सभी का कल्याण होगा ॥ १ ॥